कौल-कल्पतरु चण्डी

शारदीय नवरात्र अङ्क

वर्ष ६० : : अङ्क ६-७

१६/-

पर्व-पत्र

शारदीय नवरात्र, 'जय'-संवत् २०५८ विक्रमी से शरत् पूर्णिमा तक

(शुद्ध आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, बुधवार १७ अक्टूबर, २००१ से)

- **आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, बुधवार** (१७ **अक्टूबर,** २००१) : शारदीय नवरात्र प्रारम्भ। प्रातः-काल सतैल स्नान। ध्वजारोहण, **'कलश'-स्थापना— अभिजित मुहूर्त्त, दिन ११.३७ से १२.२३ में, अथवा 'चित्रा'-योग दिन २.१७ के बाद करें। 'चण्डी'**-पाठ आरम्भ। सप्त-दिवसीय पाठ-कर्त्ता **'सप्तशती'** के **अध्याय १** का पाठ करें।
- **आश्विन शुक्ला द्वितीया, वृहस्पतिवार** (१८ **अक्टूबर,** २००१) : **'चण्डी'**-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय २-३।**
- **आश्विन शुक्ला तृतीया, शुक्रवार** (१९ **अक्टूबर,** २००१) : **'चण्डी'**-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ४।**
- **आश्विन शुक्ला चतुर्थी, शनिवार** (२० **अक्टूबर,** २००१) : श्रीविनायक-गणेश चतुर्थी। **'चण्डी'**-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ५-६-७-८।**
- **आश्विन शुक्ला पञ्चमी, रविवार** (२१ **अक्टूबर,** २००१) : श्रीललिता-व्रत। **'चण्डी'**-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ९-१०।**
- **आश्विन शुक्ला षष्ठी, सोमवार** (२२ **अक्टूबर,** २००१) : बिल्व-अभिमन्त्रण। **'चण्डी'**-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ११।** बोधन सायं-काल (सन्ध्या-समय)।
- **आश्विन शुक्ला सप्तमी, मङ्गलवार** (२३ **अक्टूबर,** २००१) : पत्रिका-प्रवेश। अन्नपूर्णा- परिक्रमा। **'चण्डी'**-पाठ। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय १२-१३।** बलिदान। **अष्टमी (रात्रि ९.२८ के बाद) का निशा-पूजन।**
- **आश्विन शुक्ला अष्टमी, बुधवार** (२४ **अक्टूबर,** २००१) : महाऽष्टमी-व्रत। **सूर्य-ग्रहण के समान बुध-अष्टमी-पर्व।**
- **आश्विन शुक्ला नवमी, बृहस्पतिवार** (२५ **अक्टूबर,** २००१) : महा-नवमी-व्रत। महाऽष्टमी-व्रत-पारण, हवन, कुमारी-पूजन आदि। **'नवमी'**— रात्रि १२.३४ तक। **नवमी-व्रत का पारण १२.३४ के बाद।**
- **आश्विन शुक्ला दशमी, शुक्रवार** (२६ **अक्टूबर,** २००१) : विजया-दशमी। शमी-पूजन। **दुर्गा-विसर्जन-दशमी।** नील-कण्ठ-दर्शन। **जयन्ती-ग्रहण। अपराजिता-पूजन।** विजय-यात्रा। **पूर्णाभिषेक-पर्व।**
- **आश्विन शुक्ला एकादशी, शनिवार** (२७ **अक्टूबर,** २००१) : भद्रा दोपहर ३.३९ से रात्रि ४.४३। **पापांकुशा एकादशी-व्रत।** श्रीभरत-मिलाप।
- **आश्विन शुक्ला द्वादशी, रविवार** (२८ **अक्टूबर,** २००१) : एकादशी-व्रत-पारण। पद्म-नाभ-द्वादशी-व्रत।
- **आश्विन शुक्ला द्वादशी, सोमवार** (२९ **अक्टूबर,** २००१) : पुत्र-प्रदायक सोम-प्रदोष-व्रत।
- **आश्विन शुक्ला चतुर्दशी, बुधवार** (३१ **अक्टूबर,** २००१) : चतुर्दशी दिन १०.९ तक, उसके बाद **शरत् पूर्णिमा** प्रारम्भ। **कोजागरी पूर्णिमा।** रात्रि में **लक्ष्मी-कुबेर-पूजन।**
- **आश्विन शुक्ला पूर्णिमा, वृहस्पतिवार** (१ **नवम्बर,** २००१) : स्नान-दान की पूर्णिमा। कार्तिक व्रत-स्नान-नियम प्रारम्भ।

■ **मानद सम्पादक**
रमादत्त शुक्ल
■ **सम्पादक**
ऋतशील शर्मा
■ **अनुदान**
वार्षिक : १०० रु०
आजीवन : १००० रु०
अनुदान **धनादेश** या **बैङ्क ड्राफ्ट** द्वारा **'कौल-कल्पतरु'** चण्डी के नाम से **'चण्डी-कार्यालय', अलोपीबाग, प्रयाग-राज-२११००६** के पते पर कृपया भेजें।
■ **प्रकाशक :**
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान, चण्डी-धाम, प्रयाग, ✆ ५०२७८३
■ **अक्षर-संयोजन :**
ए.एस. लेजर प्वाइण्ट
कटरा, प्रयाग, फोन : ६०५७६५

'चण्डी' पत्रिका का सदस्य बनकर
उपयोगी पुस्तकें
रियायती मूल्य पर प्राप्त करें !

परशुराम-कल्प-सूत्रम्
(हिन्दी अर्थ सहित)
सुन्दर सजिल्द, २७५ पृष्ठ
मूल्य २८०-०० रु०
रियायती मूल्य २२०-००

★

सार्थ सौन्दर्य-लहरी
मूल्य ७५-०० रु०
रियायती मूल्य ५०-००

'कौल-कल्पतरु' चण्डी
वर्ष ६०
भाद्रपद-आश्विन, 'जय'- सं० २०५८ वि०
सितम्बर-अक्टूबर, २००१

इस अङ्क में

पर्व-पत्र	(आवरण पृष्ठ)
■ 'शारदा-पीठ'-'कश्मीर' के प्रति आह्वान	१४६
■ श्रीनव-दुर्गा-स्वरूप-चिन्तन	१४७
■ 'नवरात्र' के सम्बन्ध में जानने योग्य बातें	१५६
■ कालिका-पुराणानुसार नवरात्र-पूजा-पद्धति	१५७
■ सम-श्लोकी सौन्दर्य-लहरी	१८१
■ नव-ग्रह 'वार'-व्रत-विधि	१८३
■ श्रद्धाञ्जलि : पण्डित सूर्यदेव शर्मा जी	(आवरण पृष्ठ)

विशेष सूचना

- **साधारण डाक-योजना—** जिन बन्धुओं ने 'चण्डी' वर्ष ६० हेतु अपना **वार्षिक अनुदान १००/-** मनीआर्डर द्वारा नहीं भेजा है, उनकी सेवा में **अङ्क ४-५** व **अङ्क ६-७ ५०/- की पहली वी०पी० द्वारा** भेजे गए हैं। दूसरी वी०पी० **दिसम्बर,** २००१ में जाएगी।
- **विशेषाङ्क-योजना—**दूसरा विशेषाङ्क **'मन्त्रात्मक सप्तशती', भाग २** वी०पी० द्वारा **२० अक्टूबर, २००१** को जाएगा। कृपया स्वीकार करेंगे।
- **डाक-व्यय वी०पी० योजना—** सितम्बर, २००१ से **'चण्डी' का प्रत्येक अङ्क वी०पी०** द्वारा जाएगा। **वी०पी० २०/-** की होगी।
- **'चण्डी'**-पत्रिका के जो भी सदस्य **'मन्त्रात्मक सप्तशती'** मँगाना चाहते हों, वे कृपया सूचित करेंगे। **'मन्त्रात्मक सप्तशती'** के दो भाग **रियायती मूल्य की वी०पी० द्वारा** उन्हें भेजने की व्यवस्था की जाएगी।

❀ **'शारदीय'-नवरात्र की हार्दिक शुभ-कामनाएँ—ऋतशील शर्मा** ❀

★ काश्मीर-देश-निरतायै नमो नमः ★

'शारदीय नवरात्र' पर 'शक्ति के आराधकों' का

'शारदा-पीठ'— 'काश्मीर' के प्रति आह्वान!

❖ श्री ऋतशील शर्मा, चण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६

'उमा'-स्वरूपा **'काश्मीर'** की हम 'भारत'-देश-वासियों द्वारा जाने-अनजाने बहुत उपेक्षा हुई है। इसी का यह दुष्परिणाम है कि आज **'काश्मीर'**— हमारे देश के समक्ष सबसे बड़ी समस्या बन गया है। अब देश का भविष्य, देश की समृद्धि— **'काश्मीर'** पर ही टिकी हुई है। जो स्थान देश-वासियों को उदात्त बनाता था; जिसकी छवि आँखों से भुलाना सम्भव न थी, वही समस्या बन जाए, तो इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा?

समय आ गया है— **'काश्मीर'** के उस **'उमा'-स्वरूप** को पुनः पहचाना जाए। **'काश्मीर'** के समस्त ज्ञान-विज्ञान को आधुनिक सन्दर्भों में न केवल जाना-पहचाना जाए, अपितु उसे पचाकर **नई ऊर्जा** प्राप्त की जाए। ऐसा करने पर ही **'भारत'** पुनः विश्व-प्रणेता बन सकेगा!

'शक्ति' के आराधकों के लिए यह परीक्षा का समय है। **'शक्ति'** के आराधक आगे आएँ और प्राचीन **'शैव-शक्ति'-सूत्रों** के ज्ञान— प्रकाश से अवसात-ग्रस्त, भय-ग्रस्त, सङ्घर्ष-रत मानवता को नष्ट होने से उबारें! **'शिवात् पराकाशञ्चगतो नास्ति भिन्नता'** जैसे **'प्राचीन काश्मीर'** से प्राप्त सूत्रों में इतनी शक्ति है कि इनके गुञ्जन-मात्र से विश्व की समस्त **'कलुषता'** को धोया जा सकता है।

दुःख कि बात है कि **स्वतन्त्रता** के बाद जहाँ लोग **अध्ययन, प्रेरणा प्राप्त करने** के लिए जाते थे, वहाँ लोग मौज-मस्ती के लिए जाने लगे। फिल्मों के कृत्रिम आनन्द-प्राप्ति वातावरण ने **'काश्मीर'**-जैसे प्राकृतिक स्थलों से प्राप्त होनेवाली उन **प्रेरणाओं-भावनाओं** को हमसे छीन लिया, जिनसे हमारे जीवन में अच्छे-अच्छे गुणों-भावों की वृद्धि होती थी और जिसके लिए हम पूरे विश्व में प्रसिद्ध थे। अब तो **'काश्मीर'** में स्थूल रूप में **भगवान् गोपीनाथ** जैसे **पथ-प्रदर्शक** भी नहीं हैं, जिन्होंने वर्षों तक हमारी रक्षा की। **'झरनों के देश में पवित्र करनेवाले जल की कमी'**— यही **आज के भारत की सबसे बड़ी त्रासदी** है। जब **पवित्र करनेवाले जल** का अकाल होगा, तो **'आतङ्क और आतङ्क'** अनिवार्य है!

'आतङ्क'— हमारी नियति नहीं है। यह तो **हमारी भूल का परिणाम** है। **'काश्मीर'** को **'उमा'**-स्वरूपा यों ही नहीं कहा गया है। उसे तो **'मानव'**-मात्र को **दिव्यता** प्रदान करना ही है। यदि मानव— **'दिव्यता' की उपेक्षा** करेगा, तो **'कलुषता' का व्यापार** बढ़ेगा और जब **'कलुषता'** बढ़ जाएगी, तो **'कुण्डली'-स्वरूपा महा-शक्ति— 'उमा' से 'काल-रात्रि'** बनेंगी ही। ये **'काल-रात्रि'** ही **'कु-वाहनस्था', 'कु-देशस्था'** बनकर **'कलुषता'** को धोती हैं।

आज ऐसे क्षण प्रत्यक्ष हैं। **'काश्मीर-देश-निरता' महा-कुण्डलिनी-शक्ति— 'कु-देशस्था'** होकर ऐसे **'समर'** हेतु तत्पर है, जिससे **चतुर्दिक कलुषता का नाश** होगा। मनुष्यों को **'गौरी'-स्वरूप की उपलब्धि** होगी! समष्टि में **'जय'-संवत् के 'शारदीय नवरात्र'** की यही सार्थक भूमिका है।

* * *

श्रीनव-दुर्गा-स्वरूप-चिन्तन

❖ श्रीबलराम दुबे, ज्वाइण्ट डायरेक्टर सी०बी०आई०, नई दिल्ली

(एक आध्यात्मिक विश्लेषण)

नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाव वेद नहिं जाना॥

श्रीदुर्गा गर्भ से पैदा नहीं होतीं और न ही **"गगन, समीर, अनल, जल, धरणी"** की स्वाभाविक जड़ता से बन्धित होती हैं। अगम-अनन्त कलाओं के रथ से उतरती हुईं, **परम चैतन्य-मयी जननी** अन्धकार के महा-सागर से पार उतारने के लिए **ज्योतिर्मयी नौका** बन जाती हैं। उस **चिन्मय दिव्याऽऽलोक** को स्व-विमोहित **श्रीविष्णु भगवान्** सुषुप्तावस्था में ग्रहण करते हैं। प्राणों में **श्रीदुर्गा-रूपी** चैतन्य शक्ति जागृत होती है। **नारायण श्री-हरि** प्रलय की नींद से उठते हैं — **"उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः।"** (श्रीदुर्गा-सप्तशती, प्रथम अध्याय, ६१)। तब **विमर्श की शक्तियों से प्रकाश का पौराणिक युद्ध** प्रारम्भ होता है।

अन्धकार चाहे कितना भी प्रगाढ़ क्यों न हो, एक **दीपिका** के प्रकाश से भी हार जाता है। **भयभीत सृष्टि-कर्त्ता** को भय-मुक्त कर सृष्टि-सृजन के कार्यों में संलग्न करने के लिए, जब **अखिल ब्रह्माण्डों की जननी** स्वयं **चेतन-प्रकाश** बनकर उतरती हैं, तब कब तक **अन्धकार के प्रतीक—असुर-द्वय 'मधु-कैटभ'** अपने पाँव टिका सकते हैं! **'मधु-कैटभ का वध'** होता है। **श्रीदेवी द्वारा सृष्टि-सर्जक ब्रह्मा की रक्षा** होती है और इस प्रकार **सृष्टि-संरचना का कार्य** प्रारम्भ होता है—

सृष्टि-विकार-प्रलय मधु-कैटभ, प्रलय-पवन घन-तम मधु-कैटभ।
'तम-तमारि की विजय-कथा' यह, सागर-उदर-उदित-रवि, दुर्गे!
वर विरञ्चि दें, त्रास हरें आ, 'आ हम जगें, जगा माँ, दुर्गे!'...
मधु-कैटभ घन-प्रलय गहन-तम, सृष्टि-अंकुरण पर कुहरा-सम।
छाया था जल-थल-नभ-प्राङ्गण, छितराया कुहरा-सम, दुर्गे!...
जाग्रत विष्णु-विरञ्चि शक्ति से, हुए अंकुरित बीज सृष्टि के।
सृष्टि-बीज जग-बीज अम्बिके!, जननि जगद्धात्रि!, जय दुर्गे!
वर विरञ्चि दें, त्रास हरें आ, 'आ हम जगें, जगा माँ, दुर्गे!'...

कालान्तर में वही अन्धकार **महिषासुर** के प्रलयङ्कर आतङ्क के साथ प्रारम्भ होकर कण-कण में व्याप्त हो जाता है। **आसुरी अत्याचार** जब समस्त सीमाएँ तोड़कर प्रकृति के अस्तित्व को ही समाप्त करने लगता है, तब किसी-न-किसी रूप में स्वयं **देवी** प्रकट होकर स्वयं **अन्धकार-मय आसुरी शक्तियों के उच्छृङ्खल प्रचार-प्रसार पर अंकुश** लगा देती हैं।

नभ को सींग उठाए नाचे, पेट फटे जब नभ चीत्कारे।
कम्पित दलित खुरों पैरों से, विह्वल विकल धरा चीखेगी।।
अगम अनन्त कलाओं के रथ, 'किरण-पुञ्ज देवी उतरेंगी।।'...
जब जल, हवा जहर बन जाए, सागर अपना वरुण जलाए।
'अग्नि जले जब निज ज्वाला में', नभ टूटेगा, धरा फटेगी।।
अगम अनन्त कलाओं के रथ, 'किरण-पुञ्ज देवी उतरेंगी।।'

'प्रकाश का अस्तित्व' जब क्षीण होने लगता है—"**अतीव तेजसः कूटं, ज्वलन्तमिव पर्वतम्।**" समस्त देवताओं की शक्ति के रूप में पर्वताकार जाज्वल्यमान प्रकाश-पुञ्ज बनकर **महिषासुर-मर्दिनी** रूपाकार होती हैं—

अतुलं तत्र तत्तेजः, सर्व-देव-शरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी, व्याप्तं लोक-त्रयं त्विषा।।
मींजे पेट प्रसव-पीड़ा में, सीत्कारी जब प्रकृति गगन में।
उगा अनन्त असीम तेज-मय, शक्ति-पुञ्ज तब नभ-प्राङ्गण में।।...
गगन संकुचित दिगु-दिगन्त डर, सिमटे त्रि-भुवन सप्त-लोक सब।
तेज-पुञ्ज जाज्वल्यमान जब, मिला, लिया नारी-स्वरूप तब।

'श्रीदुर्गा-सप्तशती' के अनुसार सम्पूर्ण देवताओं के शरीर से प्रकट हुआ **तेज-पुञ्ज** अतुलनीय था। एकत्रित होने पर वह तेज-पुञ्ज एक **नारी** के रूप में परिणत हो गया। तीनों लोक उस **दिव्य आलोक** से देदीप्यमान हो उठे। समस्त **सुर-शक्तियों की एकता** के रूप में प्रकट उस **दिव्याऽऽलोक** के समक्ष **मदान्ध महिषासुर** के रूप में व्याप्त तिमिरान्धकार नष्ट हो गया। **समष्टि के हृदयाकाश** से **मायावी अन्धकार** का दानवी प्रकोप दूर हो गया।

इसी प्रकार, पुनः जब **'शुम्भ-निशुम्भ' का अत्याचार** अपनी चरम सीमा पर पहुँचता है, **देवताओं की दारुण अवस्था** को देखकर **जगदम्बा** द्रवित हो उठती हैं। **देवी** स्वतः प्रकट होती हैं और **'इच्छा'-शक्ति** से विविध रूपों की सृष्टि करती हैं। **समस्त देवताओं की स्वरूप-शक्तियों के रूप में** प्रकट होकर कभी अलग-अलग, तो कभी एक साथ मिलकर **दानवों से युद्ध** करती हैं। आकाश की तरह विस्तृत **शुम्भ का साम्राज्य** नष्ट हो जाता है।

जब अधर्म, अन्याय आसुरी, अत्याचार-असत्य जयी हों।
अन्धकार असहाय लुटे जब, अबला एक, कृष्ण जख्मी हों।।
सुर-सुरेन्द्र असहाय पंगु हों, स्वयं धरा निज भार दबे जब।

माँझी नाव लिए जल डूबे, 'निरालम्ब असहाय फँसे जब।।'
कभी पिघलकर गङ्ग-धार-सी, तड़ित-कौंध-सी कभी चमककर।
कभी उनींदी अलसाई-सी, 'जागृत शक्ति अनन्त-रूप धर।'
अनगिन कर, अनन्त पग चलकर, आएँ हौले हाथ पकड़ लें।
'एका एक अनेक रूप धर बसें, रचें जग, लड़ें समर में।'

विजन हिम-गिरि पर्वत के एकान्त वन-प्रान्तर में अकेली खड़ी एक अबला को सहज सुलभ्य मानकर जब **असुर-राज शुम्भ** उन पर अपना **दानवी आधिपत्य** स्थापित करना चाहता है, तब **कामान्ध शुम्भ** सहज चेतावनी की भाषा को भी नहीं समझ पाता। **दुर्गा देवी** ललकारती हैं—

यो मां जयति संग्रामे, यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रति-बलो लोके, स मे भर्त्ता भविष्यति।।

मुझे हराएगा रण में जो, चूर्ण दर्प-अभिमान करेगा।
तुल्य पराक्रम में मुझ-सा जो, मेरा स्वामी वही बनेगा।।

धूम्र-लोचन, चण्ड, मुण्ड, रक्त-बीज जैसे प्रधान सेना-पतियों एवं भ्राता **निशुम्भ** जैसे परम वीर के एक-एक कर स-सैन्य मारे जाने पर भी जब **शुम्भ** को **अनन्त महिमा-मयी देवी के दिव्य स्वरूप का बोध** तक नहीं होता, तब चारों ओर से घेर कर खड़ी असंख्य व्यूह-बद्ध सुर-शक्तियों से युद्ध के मैदान में स्वयं को निस्सहाय अकेला घिरा हुआ देखकर, बोल पड़ता है—

बलावलेपाद् दुष्टे! त्वं, मा दुर्गे! गर्वमावह।
अन्यासां बलमाश्रित्य, युद्ध्यसे याति मानिनि!।।

साज सैन्य चतुरङ्ग चला जो, अबला एक मान हरने को।
निर्लज्ज बोला शुम्भ, एक मैं, तुम गर्वीली उधर अनेकों।।
गर्व पराए बल विशाल पर, दम्भ दूसरों के बल दुष्टे!
एक असुर मैं, सैन्य लिए तू, मिथ्या मान न कर मन दुर्गे!!

अर्थात् दूसरी नारियों के बल पर तुम्हारा इतना घमण्ड! ओ दुष्टे! व्यर्थ का अभिमान न दिखा! देवी सुनती हैं। **अहङ्कार-जन्य अन्धकार की भाषा** समझती हैं। **दया-मयी गुरु** की भाँति **अम्बिका** उसे अब भी अपने **स्व-प्रकाश के दिव्य ज्ञानाऽऽलोक** में लाना चाहती हैं। कहती हैं—

एकैवाऽहं जगत्यत्र, द्वितीया का ममापरा?
पश्यैता दुष्ट! मय्येव, विशन्त्यो मद्-विभूतयः।।

मात्र ऐसा कहती ही नहीं हैं, समस्त नाम-रूपों में प्रकट सुर-शक्तियों को स्वयं में समेट भी लेती हैं। पर, **महा-अभिमानी शुम्भ का भ्रम** दूर नहीं हो पाता।

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता।
तत्-संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव।।

एका एक अकेली हूँ मैं, नैका दूजा कहीं न कोई।
देख दुष्ट! मेरी विभूतियाँ, लीन हुईं लय शेष न कोई।।..
रूप-अनन्त विभूति अनेकों, स्वयं एक विस्तार जगत् का।
सिमट सहेज खड़ी मैं सब कुछ, रुक थिर देख शुम्भ! मैं एका।।

शुम्भ इसे **देखकर भी अनदेखा** करता है। समझ कर भी **नासमझ** बना रहना चाहता है। शायद यही **नियति** है— अन्धकार की! यही कामना भी!

अभय-दान वरदान न माँगा, अमिय सुधा-रस-दान न माँगा।
युद्ध हलाहल समर - याचना करता, शुम्भ अन्त रण माँगा।।

सत्य की विजय अवश्यम्भावी है। **शुम्भ-रूपी महा-अन्धकार** को भी अन्ततोगत्वा नष्ट तो होना ही था, हुआ भी! उसके नष्ट होते ही **प्रकाश का चैतन्य-कुसुम** खिलता है। सर्वत्र प्रसन्नता छा जाती है—

ततः प्रसन्नमखिलं, हते तस्मिन् दुरात्मनि।
जगत् स्वास्थ्यमतीवाप, निर्मलं चाभवन्नभः।।

असुर भयङ्कर भार धरा का, टला गिरा जब शुम्भ हताहत।
स्वस्थ जगत् निर्मल जल-थल-नभ सब प्रसन्न, जब मरा असुर वह।।
गहन मेघ उत्पाती उल्के, स्वच्छ शान्त शुभ मङ्गल-कारी।
शान्त हुए उत्पात जगत के, सरिता बही सु-पथ हितकारी।।..
सकल सृष्टि शम-शान्त-निरामय, सुर-सुरेन्द्र सुर-पुर शुभ-मङ्गल।
व्याप्त सुखद शुभ-शान्ति चतुर्दिक्, स्वस्थ-सुभग संसार सु-मङ्गल।।

और इस प्रकार **अन्धकार-प्रकाश, सत्य-असत्य, सुर-दानव, संग्राम-नाटक** जो सृष्टि के उदय-काल से ही प्रारम्भ है, किसी-न-किसी रूप में सदैव चलता रहता है। दूब की तरह दब-दब कर, **असुर मर-मर कर प्रकट** होते रहते हैं। यह सिलसिला **सृष्टि-पर्यन्त** चलता रहेगा, पर यह भी सत्य है कि बार-बार **नाम-रूपों की बदलती हुई भूमिका में श्री देवी प्रकट हो-होकर असुरों का —आसुरी-विकारों का विनाश** करती रहेंगी—

इत्थं यदा-यदा बाधा, दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदाऽवतीर्याऽहं, करिष्याम्यरि-संक्षयम्।।

जब-जब बढ़े दनुज-भय-बाधा, ले अवतार भार वसुधा का—
हरूँ, करूँ मैं नाश अधर्मी, दनुज-वंश दुर्जन, दुष्कर्मी।।

वास्तव में **'शुम्भ-निशुम्भ'** आदि दानव-समूह कोई बाह्य शत्रु नहीं, **'मानवता के चिरन्तन शत्रु'** हैं। ये अन्तरात्मा को अनेकानेक आवरणों में ढँक कर, दृढ़-तम ग्रन्थि-पाशों में जकड़ कर हमारे अपने **'प्रिय स्वप्न'** बन जाते हैं! ये हमें आभास ही नहीं होने देते कि **'हम कितना अधिक विलग हो गए हैं अपने से।'** स्वयं अपने ही द्वारा निर्मित मरु के विस्तार में दम तोड़ते हुए, हम अपनी ही गन्ध से दूर होते चले जाते हैं—**विनाश की ओर!**

उक्त **'स्वात्म-दर्शन'** की **'अन्तर्मुखी आध्यात्मिक यात्रा'** ही **'श्रीनव-दुर्गा-साधना की रहस्य-मयी उपलब्धि'** है, जो **गुरु-कृपा** से **'प्रथमं शैल-पुत्री च, द्वितीयं ब्रह्म-चारिणी'** से लेकर **'नवमं सिद्धि-दात्री च, नव-दुर्गाः प्रकीर्तिताः'** के रूप में परिणत होकर परिपक्व होती है।

प्रथमं शैल-पुत्री च, द्वितीयं ब्रह्म-चारिणी।
तृतीयं चन्द्र-घण्टेति, कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।।
पञ्चमं स्कन्द-मातेति, षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं काल-रात्रीति, महा-गौरीति चाष्टमम्।
नवमं सिद्धि-दात्री च, नव-दुर्गाः प्रकीर्तिताः।।

☐ **'शैल-पुत्री'**—यह कैसी विडम्बना है कि स्वयं अपनी ही पुत्री को हम नहीं पहचान पाते। **दम्भी दक्ष-राज** की तरह सौ-सौ मुखों से **'शिव-प्रिया'** की अवहेलना करते रहते हैं। भगवती हमें नयन से बतलाती हैं, सदा इङ्गित करती रहती हैं, पर हम नेत्र खोलें— तब तो निहार सकें— उनके प्रकट साम्राज्य को, पहचान सकें— **स्वामी कार्तिकेय** को, जो हमारे ही अनन्त कोटि-जन्मों के दुश्मन **तारकासुर का वध** करने के लिए गर्भ में भ्रूण के रूप में पल रहे होते हैं। हृदय में पल रहे अंगुष्ठ-मात्र के इस **'प्राण-पुरुष'** की 'स्मृति'-वन्दना में मुखर 'कठोपनिषद्' हमें मार्ग दिखाता तो है, पर बन्द-नयन हम अपने ही बुने हुए स्वप्नों के जाल में फँसे रह जाते हैं!

हमारे हृदय के **'अनाहत'-चक्र** में विद्यमान् देवी कब तक इस अत्याचार को सहेंगी! एक पिता के द्वारा अपनी ही प्राण-पुत्री की अविरल अवहेलना को कब तक झेलती रहेंगी? कूद पड़ती हैं— **पिता दक्ष-राज के 'यज्ञ'-कुण्ड** में! जब **पिता दक्ष-राज** की आँखें खुलती हैं, **सती** पुत्री जल चुकी होती हैं! हम अपनी ही राख मुट्ठी में लेकर तलाशते रह जाते हैं— उन्हें! एक और भ्रूण-हत्या का पाप ढोने के लिए विवश हो जाते हैं, हम!

एक और जन्म के अर्जित शापित संस्कारों के कुलिश-आवरण को ढोते हुए हम स्वयं से और अधिक दूर हो जाते हैं। इस असहायता की स्थिति में हमारे साथ न तो **भगवती** रहती हैं, न अजन्मे **कार्तिकेय,** जो **आसुरी सेना** से हमारी रक्षा कर सकें और न **शिव,** जो परम मोक्ष की राह पर हमारा मार्ग-दर्शन ही कर सकें।

पर, पुत्र चाहे कितना भी निर्मम हो जाए, **भक्त-वत्सला माता** कभी भी हमसे विमुख नहीं होतीं। सर्वदा हमारे पास रहती हैं कि कब हम उन्हें याद करें, कब आहूत करें, निमन्त्रित करें और कब वे हमारे हृदय में **तारकारि कार्तिकेय** और **विघ्नेश्वर-बीज** के साथ परमानन्द-मयी अमित किरण-सी **शैल-पुत्री** के रूप में अवतरित होकर, हिमालय से भी अधिक हमारे कठोर हृदय को कृपा-सुधा की गङ्ग-धारा से तृप्त करें।

☐ **'ब्रह्म-चारिणी'**—सती ने ही हिमालय की कन्या **पार्वती** के रूप में अवतार ग्रहण किया। इन्हीं **शैल-पुत्री गिरिजा** ने **ब्रह्म-चारिणी** और **चन्द्र-घण्टा** का नाम धारण कर **शिव** को प्राप्त करने के लिए कठोर तप किया। किशोरी धीरे-धीरे युवती बनीं और **कूष्माण्डा** के रूप में उन्हें **शिव के दर्शन** प्राप्त हुए। **शिव-प्रसाद** के रूप में आकर **कार्तिकेय** ने **कूष्माण्डा** की गोद को आलोकित किया। भगवती प्रसूता हुईं और **स्कन्द-माता** के रूप में उन्होंने **कार्तिकेय** को जन्म दिया। **तारकासुर** का संहार हुआ। जगत्-कल्याण के लिए उन्हीं **कात्यायनी देवी** ने **मङ्गल-मूर्ति गणेशजी** को उत्पन्न किया। **उमा** ही **पार्वती** हुईं, जिनके शरीर-कोष से **कौषिकी-कात्यायनी** का उद्भव हुआ। **शुम्भ-निशुम्भ-मर्दिनी देवी कात्यायनी दुर्गा** ने ही **काल-रात्र्यादि शक्तियों, कालो, चामुण्डादि-रूपों** में प्रकट होकर **चण्ड-मुण्ड, रक्त-बीज** आदि **दानव वीरों का संहार** किया। उन्होंने ही **महा-गौरी** के रूप में **शिव** से सायुज्य प्राप्त कर स्वयं ही **शिव** को सिद्धि प्रदान किया तथा जगत् में **सिद्धि-दात्री** के रूप में सु-विख्यात हुईं।

श्रीनव-दुर्गा के उल्लिखित **नव-रूपों** में प्रथम तीन रूप उत्तरोत्तर साधनात्मक विकास के तीन स्तर हैं, जब **साधना की किरण-बाला** के जन्म लेते ही **हृदय दीप-शिखा के चिन्मय प्रकाश से आलोकित** हो उठता है, तब **तमान्ध** मिट जाता है। **किशोरी किरण-बाला** प्रकाश के स्रोत के वियोग में समस्त बन्धनों को तोड़कर **तपस्या** के लिए उन्मुख होती हैं। माता, पिता, बन्धु-बान्धव **उमा-उमा** कहकर चिल्लाते हैं कि बेटी **तपस्या की राह** अत्यन्त विकट है! मत जाओ! तप मत करो। पर, **उमा** रुकती नहीं हैं।

☐ **चन्द्र-घण्टा**—वृष-वाहिनी उमा **(शैल-पुत्री)** किशोरी-ब्रह्म-चारिणी के बाने में पैदल ही घर से निकल पड़ती हैं, मात्र हाथ में **'कमण्डल'** और **'जप-माला'** लेकर तपस्या-रत होती हैं। वन-वन भटकती हुई वही किशोरी बीहड़ जङ्गलों की रानी **'वन-दुर्गा', 'चन्द्र-घण्टा', 'सिंह-वाहिनी'** के रूप में महोग्र भाव से समस्त विघ्नों को झेलते हुए शिव को प्रसन्न करती हैं।

☐ **कूष्माण्डा**—साधना फलित होती है। **शिव 'कूष्माण्डा' को दर्शन-लाभ** देते हैं। अन्दर और

बाहर **शिव-मय मिठास** से पगी हुई **कूष्माण्डा** प्रिय-मिलन के बाद प्रसूता होती हैं और **स्कन्द-माता** के रूप में **तारकारि स्कन्द** को जन्म देती हैं।

☐ **स्कन्द-माता**—स्कन्द-माता **पञ्चमी** हैं। **पञ्चमी**—पञ्च-भूतेशी, पञ्च-संख्योपचारिणी, पञ्च-यज्ञ-प्रिया, पञ्च-प्रेत-मञ्चाधिशायिनी हैं। **भगवान् स्कन्द की माता** उन्हें पालती हैं, पोषती हैं, सुधा-स्रुति से सिञ्चन करती हैं। वे **देव-माता** ही नहीं, **देव-सेना** भी हैं अर्थात् **भगवान् स्कन्द की शक्ति** हैं, **कौमारी** हैं, **शक्रादि-वन्दनीया 'कात्यायनी'** हैं।

☐ **कात्यायनी**—कात्यायनी नव-दुर्गाओं में **षष्ठी** हैं—**'ॐ ह्रीं षष्ठी-देव्यै स्वाहा।'** षष्ठ चक्रोपशोभिता भी हैं। गज-वदन-जननी **कात्यायनी** देवत्व की रक्षा के लिए युग-युगान्तर तक असुरों के साथ युद्ध करती हैं, करती रहेंगी। जिस प्रकार सिंहनी को अपने शावक प्रिय हैं, भगवती अपनी सृष्टि की रक्षा के लिए अहर्निश 'परिश्रम'-रत रहती हैं। **दिव्यता एवं देवत्व की रक्षा** तथा जो पाशविक है, पैशाचिक वृत्ति है, आसुरी शक्ति है— उसका **संहार** करती हैं।

☐ **काल-रात्रि**—शिव को पाकर भी शिव से अब-तक दूर रही हैं— **'शिवा'। स्कन्द-माता** के रूप में सृष्टि-क्रम में रहते हुए, **शिव-बीज** को ग्रहण कर उसे प्रस्फुटित करते हुए तथा **कात्यायनी** के रूप में उसकी रक्षा करते हुए, उसे पालते-पोषते हुए, जननी सृष्टि के लालन-पालन में इस प्रकार रत हुईं कि उन्होंने **शिव से सायुज्य** प्राप्त करने का, अपनी पृथक् सत्ता को **शिव में समाहित** करने का अब तक विचार ही नहीं किया।

शिव की स्मृति आते ही हरे-भरे सृष्टि-उद्यान को, अखिल विश्व-साम्राज्य को त्याग कर **प्रकाश की देवी—विमर्श के गहन अन्धकार में** निकल पड़ती हैं। उन्हें **सिंह-वाहन** को भी साथ रखने का विचार नहीं होता। न उसकी आवश्यकता ही रह जाती है— **'काल-रात्रि'** को! **पूर्ण समाधि की देवी, अवचेतन की सहचारिणी-सङ्गिनी,** जिनकी वन्दना में **ब्रह्माजी** ने स्वयं की रक्षा के लिए, **मधु-कैटभ के सन्त्रास से जगत् की रक्षा** के लिए, निर्विकल्प समाधि से विष्णु भगवान् को जगाने के लिए, कहा है—

काल-रात्रिर्महा-रात्रिर्मोह-रात्रिश्च दारुणा। त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोध-लक्षणा॥

श्री विष्णु भगवान् के अङ्ग-प्रत्यङ्ग से निकल कर उन्हें चैतन्य करनेवाली, सम्बोधित करनेवाली **देवी काल-रात्रि**— महान्धकार के क्रोड़ से निकल कर **शाश्वत प्रकाश-स्तम्भ** के रूप में प्रकट होती हैं, जिससे संसारार्णव में भटकते हुए निश्चेष्ट जनों को गहन अन्धकार में मार्ग मिले। **'खर'-रूपी महान्धकार** पर सवार रहनेवाली **काल-रात्रि**— अन्धकार में भ्रमित **चण्ड-मुण्ड, रक्त-बीजादि** दैत्य-समूह की मुक्ति के मार्ग को सहज ही प्रशस्त कर देती हैं। काल-निशा की तरह फैली हुई अलकों में छिप जाते हैं— चाँद-सितारे! सब उन्हें **सिंह की पीठ** पर तलाशते रह जाते हैं! **अखिल विश्व के दिव्य साम्राज्य की साम्राज्ञी— शिव की तलाश में गधे की पीठ पर** सवार होकर अथक घूमती रहती हैं! काले पड़ जाते हैं—अङ्ग-प्रत्यङ्ग!

कठिन होता है—**देवत्व का सृजन!** उससे भी अधिक कठिन है, उसकी **दिव्यता की रक्षा** करना तथा उसकी **निरन्तरता** को बनाए रखना। जब धूमिल पड़ने लगते हैं— **देवत्व के**

शिखर, जगत्-कल्याणार्थ स्वयं उस कालिमा को आत्म-सात् कर **शैलपुत्री-पार्वती—काली** हो जाती हैं! **कौशिकी** को जन्म देकर **पार्वती—कालिका** बन जाती हैं! **अम्बिका** पर दानवी प्रहार को स्वयं झेलने के लिए **'चण्डी'** बन जाती हैं! **शिव-दूती** के रूप में **शुम्भ-निशुम्भ** के अस्तित्व को नकारतीं ही नहीं, उन्हें सन्मार्ग पर प्रेरित करने के लिए, उन्हें निज-स्वरूप में स्थापित करने के लिए अर्थात् **पाताल-लोक** चले जाने के लिए प्रेरित करती हैं और प्रेरणाओं की अवहेलना पर उनका **निर्मम संहार** भी कर देती हैं।

मध्य-प्रदेश का प्रसिद्ध नगर **जबलपुर—सिद्ध शक्ति-पीठ** के रूप में विख्यात हो या न हो, **भगवती काल-रात्रि** की सतत साधना का शाश्वत क्षेत्र है। यहाँ **नर्मदा (भेड़ाघाट—चौंसठ-योगिनी)** की पृष्ठ-भूमि में **शिव-शङ्कर का दिव्याकर्षण** बर-बस साधकों को अपनी ओर खींच लाता है। नगर की हृदय-स्थली में स्थित हैं—**भगवती खेर-माई। 'खर'** अर्थात् गधे पर सवार आप **देवी काल-रात्रि** ही हैं।

उ०प्र०, 'काशी'-क्षेत्र, नगर **वाराणसी, गङ्गाजी** के किनारे **दशाश्वमेध-घाट** पर स्थित है — **शीतला माता का स्थान।** आप **स्वच्छता** एवं **शुद्धता** की देवी हैं। प्रचलित श्री-विग्रहों में आपको **'खर'** अर्थात् गधे पर सवार दर्शाया जाता है। आपने अपने दो हाथों में स्वच्छता के प्रतीक-चिह्न **झाड़ू** तथा **जल भरे कलश** को धारण किया हुआ है। **'खर'**—अज्ञानता-रूपी अन्धकार का प्रतीक है। आप अन्दर एवं बाहर की गन्दगी को साफ कर देती हैं। साधकों के हृदय से समस्त दुर्गुणों को दूर कर देती हैं। सारी विघ्न-बाधाओं का निवारण करती हुई, उसके मार्ग को प्रशस्त करती हैं। **भगवती काल-रात्रि** को भी **'खर'-वाहना** कहा गया है। आपके स्मरण-मात्र से ही समस्त **साधनात्मक बाधाएँ** स्वतः ही दूर हो जाती हैं।

☐ **महा-गौरी—देवत्व की रक्षा** के लिए, **सत्य की पुनः स्थापना** के लिए, देवताओं को दिए हुए वचन को निभाने के लिए, **त्रिपुर-सुन्दरी पार्वती—कालिका** बन जाती हैं, तभी **शुम्भ-निशुम्भ का संहार** सम्भव हो पाता है। कब तक छिपी रह पाएँगी **शिवा,** गहन अन्धकार के साए में? प्राण-प्रिया की तलाश में निकल पड़ते हैं— **शिव! 'कैलाश'**-शिखर से लेकर तराइयों में, उत्तुङ्ग शिखरों से लेकर **विन्ध्याचल, अमर-कण्टक**-पर्वत-शृङ्खलाओं की दुर्गम गुफाओं में तलाशते हुए आ ही जाते हैं, अपनी **सनातन तपो-भूमि— त्रिशूल-भेद-क्षेत्र** में। कहते हैं कि प्रलय-क्रोधाग्नि में तपते हुए **'ताण्डव'-रत शिव** ने जब अपना **त्रि-शूल** फेंका, वह **जबलपुर (म०प्र०)** के **लम्हेटा-घाट** स्थित **त्रिशूल-भेद-क्षेत्र** में गिरा। ज्वालामुखी फट पड़ा, जिसके प्रलय-प्रवाह में विश्व समा गया। कालान्तर में इस प्रलयाग्नि को शान्त करने के लिए **श्री नर्मदाजी का अवतरण** हुआ। **शिव-पुत्री नर्मदा** ने प्रलयाग्नि को शान्त किया। सृष्टि-संरचना का कार्य सम्पादित हो सका। तब **हिमालय की उत्पत्ति** भी नहीं हुई थी। **विन्ध्य** की वादियों में ही **शिव की आदि-लीला** प्रारम्भ हुई थी।

प्रलय-नींद में सोए हुए **'महा-काल'** अपनी पलकों में निवास करनेवाली **भगवती काल-रात्रि** को पहचान नहीं पाते। प्रगाढ़ निद्रा में पड़े हुए हम स्वयं को समझ नहीं पाते। संस्कारों के

आवरणों में गुम्फित हीरक-मणि को देखकर भी हम पहचान नहीं पाते हैं। **ज्ञान-प्रकाश** के उदय होते ही, **'दिव्य' चक्षु** स्वतः खुल जाते हैं। **'शिव' काल-रात्रि का दर्शन** कर उन्हें पहचानते हैं, अपनाते हैं। निर्मल जल-धार में धोकर, प्रिया के अङ्ग-प्रत्यङ्ग चमकाते हैं। **कालिमा** मिट जाती है। **अन्धकार** दूर हो जाता है। **गौराङ्ग** निखर आता है। **शिव** अवाक् देखते रह जाते हैं! मुँह से निकलता है— **'गौरी'! शिव 'गौरी'** का पूर्ण शृङ्गार करते हैं। अपने हाथों से प्रिया को सजाते हैं। बैल पर साथ बिठाते हैं। आज भी हम **जबलपुर (मेड़ा-घाट)** के **गौरी-शङ्कर-मन्दिर** के **गर्भ-गृह** में **गौराङ्गी दुल्हन पार्वती** के साथ अतिशय गौरवान्वित **शिव शङ्कर** को **बसहा बैल** पर बैठे हुए देख सकते हैं, मानो अभी-अभी **'प्राण'**-कोहबर में प्रविष्ट करनेवाले हों!

'काल-रात्रि' की तपस्या के दिन पूरे होते हैं। वे **'महा-गौरी'** के रूप में **शिव की अर्द्धाङ्गिनी** बनती हैं। **गौरी** की तपस्या का श्री-गणेश चाहे **हिमालय**-पर्वत में हुआ हो, पर उसका समापन तो **भारत के हृदय-स्थल** में ही होता है, जहाँ **शिवा** स्वयं **महा-काल शिव** को सिद्ध बनाती हैं। **ज्योतिर्लिङ्ग महा-काल** की पुण्य नगरी उज्जैन की अधिष्ठात्री देवी **हरसिद्धि माता** हैं। कौन हैं वे? **श्री-यन्त्र की अधिष्ठात्री देवी— महा-त्रिपुर-सुन्दरी।** आप ही **नवमी दुर्गा— सिद्धि-दात्री** हैं।

☐ **सिद्धि-दात्री—'शैल-पुत्री'** से **'सिद्धि-दात्री'** की यात्रा में **श्री दुर्गा** मात्र **शिवा** ही नहीं रह जातीं— वे समस्त ब्रह्माण्डों की **महा-नायिका,** अखिल विश्व की **महा-राज्ञी—अखिलेश्वरी,** समस्त **देवताओं की अधिष्ठात्री, सिद्धि-दायिनी, प्राण-दायिनी शक्ति** के रूप में विद्यमान होती हैं। **श्री ब्रह्मा, विष्णु, महेश** और **ईश्वर— त्रिपुर-सुन्दरी-माँ सिद्धि-दात्री** के समक्ष नत-मस्तक हो जाते हैं और उनके झुके हुए मस्तक-पर्यङ्क पर बिछता है— **सदा-शिव का दिव्यासन,** जिस पर विराजमान होती हैं— **महा-त्रिपुर-सुन्दरी सिद्धि-दात्री महा-रानी महा-सिंहासनेश्वरी माता!**

इस प्रकार **श्री दुर्गा** के **नौ रूप—'श्री-यन्त्र'-साधना** के प्रधान **नौ 'ध्यान'-विन्दु** भी हैं। **'परा'-विन्दु** से **'शैल-पुत्री'** के रूप में प्रकट होकर **भवानी परम-सिद्धि-दायिनी महा-त्रिपुर-सुन्दरी— 'सिद्धि-दात्री'** के रूप में प्रकट होती हैं।

संक्षेप में, **'साधना'** प्रथमतः **'शैल-पुत्री'** के रूप में साधक के हृदय में जन्म लेती है। **'शैल-पुत्री'** उमा की तरह तपस्विनी **'ब्रह्म-चारिणी'** बनती है। तरुणाई पाकर वह पुष्पित होती है तथा **'कूष्माण्डा'** के रूप में फलित होती है। **'साधना'** के इस स्तर पर हृदय में **'प्राण'-पुरुष ईश्वर 'स्कन्द'** के रूप में जन्म लेते हैं और **'साधना' 'स्कन्द-माता'** बनती है। फिर इसी की छाँव में **कल्याणकारी मङ्गल-मूर्ति श्री गणेश जी** उत्पन्न होकर साधक **सदा-शिवता—'कात्यायनी'** को प्राप्त करते हैं। साधक का यह **'कात्यायनी'**-प्रकाश व्यष्टि-गत विकास से आगे बढ़कर **'काल-रात्रि'** के रूप में जगत् के अन्धकार-मय विकार को दूर करता है। ऐसा होते ही साधक के हृदय में **'महा-गौरी'** के रूप में षोडश-कलाओंवाले चन्द्रमा की तरह शीतलता प्रदान करती हुई **जगदम्बिका 'सिद्धि-दात्री'** के रूप में प्रतिष्ठित होती हैं। इस प्रकार **'साधना' सिद्धि की पराकाष्ठा'** को प्राप्त करती है।

* * *

'नवरात्र'-व्रत के सम्बन्ध में जानने योग्य महत्व-पूर्ण बातें

❖ पं० कृपाशङ्कर दुबे शास्त्री, ८५ए सेक्टर वाई, बर्राभाग दो, इ०डब्लू०एस, कानपुर-२७

☐ **'नवरात्र-व्रत एवं पूजन'**—'अमावस्या'-युक्त प्रतिपदा में नहीं करना चाहिए। **'प्रतिपदा'- युक्त द्वितीया** में **पूजन** एवं **व्रत** का शुभारम्भ करना अत्यन्त श्रेयष्ठकर होता है। 'देवी-पुराण' कहता है —

अमा-युक्ता न कर्त्तव्या, प्रतिपद-पूजने मम्। मूहूर्त्त-मात्रा कर्त्तव्या, द्वितीयादि-गुणान्विता।।

☐ **'कलश'-स्थापना—** श्रीशुभ संवत् २०५८ वि०- शाके १९२३ शुद्ध आश्विन शुक्ल पक्ष, **'प्रतिपदा'**-तिथि **बुधवार, १७ अक्टूबर २००१** को **प्रातः-काल से रात्रि ग्यारह बजकर बत्तीस मिनट तक** है। **बुधवार, १७ अक्टूबर २००१** को **'चित्रा'**-नक्षत्र **प्रातः-काल से दोपहर २ बजकर, १७ मिनट** तक है। शास्त्रों के अनुसार **'चित्रा'-नक्षत्र में 'कलश'-स्थापना का निषेध** है। **'हस्त'**-नक्षत्र-युक्त **प्रतिपदा** में **'कलश'-स्थापन** करना श्रेयष्कर माना जाता है। इस बार **'नव-रात्र'** में **'हस्त'**-नक्षत्र **'प्रतिपदा'**-तिथि को प्राप्त नहीं है। **'हस्त'**-नक्षत्र—**'अमावस्या'**-तिथि,. **१६ अक्टूबर —मङ्गलवार** को दिन में ३ बजकर, ३० मिनट पर ही समाप्त हो जाता है, जो कि अग्राह्य है।

अतः **'कलश'-स्थापना— बुधवार, १७ अक्टूबर २००१** को दिन में **दो बजकर सत्रह मिनट के पश्चात्** करना श्रेयष्कर है। अथवा, **'कलश'-स्थापना**—अभिजित् मुहूर्त्त दिन ११.३७ से १२.२३ में करें।

☐ **'महा-अष्टमी'—** इस बार **'शारदीय नवरात्र'** में **'प्रतिपदा'**-तिथि से **'नवमी'**-तिथि तक किसी भी **'तिथि की हानि'** अथवा **'वृद्धि'** नहीं है। **'महा-अष्टमी'**-तिथि—**बुधवार, २४ अक्टूबर २००१** को **प्रातः-काल से रात्रि १०।४६ तक** है।

☐ **'महा-नवमी'— 'नवमी'**-तिथि— **वृहस्पतिवार, २५ अक्टूबर २००१** को **प्रातः-काल से रात्रि १२।३४ तक** है।

अपनी **'कुल'-परम्परा** के अनुसार **'अष्टमी'** अथवा **'नवमी'**-तिथि को **'हवन'** आदि सम्पन्न करना चाहिए। **वृहस्पतिवार, २५ अक्टूबर, २००१** को **रात्रि १२ बजकर, ३४ मिनट** तक **'नवमी'**-तिथि है। इसके पश्चात **'दशमी'**-तिथि आरम्भ होती है। अतः **'नवमी'**-तिथि को **रात्रि १२ बजकर, ३४ मिनट** के पश्चात् **'अन्न'-ग्रहण** करने का श्रेयष्कर समय है।

☐ **'विसर्जन'— सम्पूर्ण पूजन-सामग्री, दुर्गा-प्रतिमा-विसर्जन** का श्रेष्ठ समय **शुक्रवार, २६ अक्टूबर २००१** को है। **भगवती दुर्गा** सर्व-रूप-मयी हैं, अतः उनसे सम्पूर्ण **'विश्व के कल्याण की कामना'** करना चाहिए।

* * *

कालिका-पुराणानुसार

'नवरात्र'-पूजा-पद्धति

दैनिक-पूजा-क्रम

नित्य-क्रिया करने के बाद हाथ में कुश ले **'आचमन'** करे। फिर **'स्वस्ति'-वाचन** कर **'सूक्त'-पाठ** कर कुश-तिल-जल लेकर **'सङ्कल्प'** करे—

अद्येत्यादि नवम्यां तिथावारभ्य महा-नवमीं यावत् (षष्ठ्यां, प्रतिपदि तिथावारभ्य वा) प्रत्यहं अमुक-गोत्रः श्रीअमुक-देव-शर्मा श्रीदुर्गा-प्रीति-कामः वार्षिक शरत्कालीन श्रीदुर्गा-महा-पूजा-कर्माहं करिष्ये।

फिर **'चण्डी'-पाठ का सङ्कल्प** कर पञ्च-गव्य-शोधन- पूर्वक **'सामान्यार्घ्य'-स्थापन, द्वार-पूजा, विघ्नोत्सारण, माष-भक्त-बलि, आसन-शुद्धि, भूत-शुद्धि, मातृका-न्यास, प्राणायामादि** कर **'भगवती दुर्गा का ध्यान'** करे। मानसोपचारों से उनकी **पूजा** कर **'विशेषार्घ्य'** स्थापित करे। तब मण्डल में **पीठ-पूजा** कर **'घट'**-स्थापित करे। फिर **गणेशादि पञ्च-देवों की पूजा** कर पुनः **ध्यान** कर आवाहन-पूर्वक **षोडशोपचारों से देवी की पूजा** करे। तब यथा-शक्ति मूल-मन्त्र का **'जप'** कर, 'जप'-फल समर्पित कर **'नीराजन'** करे। प्रति-दिन इसी क्रम से पूजा करे।

* * *

बोधन-विधान (प्रातः-काल षष्ठी या नवमी में)

नित्य कर्म से निवृत्त होकर साधक शुद्धासन पर बैठकर आचमन-पूर्वक **'ॐ तत् सत्'** कह कर स्व-शाखोक्त **'स्वस्ति-वाचन'** करे। फिर—

'ॐ सूर्यः सोमो यमः कालः, सन्ध्ये भूतान्यहः क्षपा।
पवनो दिक् - पतिर्भूमिराकाशं खचरामराः।
ब्राह्मं शासनमास्थाय, कल्पध्वमिह सन्निधिम्।।

उक्त पढ़कर **साक्षी देवताओं का अभिवादन** करे।

तब यह पढ़कर **भगवान् विष्णु का स्मरण** करे— **'ॐ तद् विष्णोः परमं पदं, सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्। ॐ विष्णुः, ॐ विष्णुः, ॐ विष्णुः। ॐ पुण्डरीकाक्षः।'**

पुनः कुश-तिल-जल-युक्त ताम्र-पात्र लेकर **'सङ्कल्प'** करे। यथा—

ॐ विष्णुरोम् तत्सदद्याश्विने मासि शुक्ले पक्षे षष्ठ्यां तिथौ अमुक-गोत्रः श्रीअमुक-देव-शर्मा श्रीदुर्गा-प्रीति-कामः वार्षिक-शरत्कालीन श्रीभगवती-दुर्गा-महा-पूजाङ्ग-भूत-बिल्व-वृक्षाधिकरणक

श्रीभगवती-दुर्गा-देवी-बोधन-कर्माहं करिष्ये (अमुक-गोत्रस्य करिष्यामि वा)

इस प्रकार **'सङ्कल्प'** कर उक्त जल को **'ईशान'**-कोण में छोड़कर स्व-शाखोक्त **'सूक्त' का पाठ** करे। तब **'सामान्यार्घ्य'-पात्र** स्थापित कर **भूत-शुद्धि, मातृका-न्यासादि** कर स्व-शाखोक्त विधि से **'घट की स्थापना'** करे। फिर **गणेशादि पञ्च-देवों, आदित्यादि नव-ग्रहों, इन्द्रादि दश दिक्पालों** और **मत्स्यादि दशावतारों** की पूजा **'घट'** में करे। तब **प्राणायाम, ऋष्यादि-न्यास** कर **'हां अंगुष्ठाभ्यां नमः'** इत्यादि से **'कराङ्ग'-न्यास** कर देवी का **'ध्यान'** करे। यथा—

ॐ जटा - जूट-समायुक्तामर्द्धेन्दु-कृत-शेखरां।
लोचन - त्रय - संयुक्तां, पूर्णेन्दु-सदृशाननां।।
तप्त - काञ्चन-वर्णाभां, सुप्रतिष्ठां सुलोचनां।
नव - यौवन - सम्पन्नां, सर्वाभरण-भूषितां।।
सुचारु - दशनां तीक्ष्णां, पीनोन्नत-पयोधरां।
त्रिभङ्ग - स्थान-संस्थानां, महिषासुर-मर्दिनीं।।
मृणालायत - संस्पर्श - दश-बाहु-समन्वितां।
त्रिशूलं दक्षिणे ध्येयं, खड्गं चक्रं क्रमादधः।।
तीक्ष्ण-बाणं तथा शक्तिं, दक्षिणे सन्निवेशयेत्।
खेटकं पूर्ण - चापं च, पाशमंकुशमेव च।।
घण्टां वा परशुं वापि, वामतः सन्निवेशयेत्।
अधस्तान्महिषं तद्वद्, वि-शरस्कं प्रदर्शयेत्।।
शिरश्छेदोद्भवं तद्वद् - दानवं खड्ग-पाणिनं।
हृदि शूलेन निर्भिन्नं, निर्यदन्त्र-विभूषितां।।
रक्त - रक्ती-कृताङ्गं च, रक्त-विस्फुरितेक्षणं।
च नाग - पाशेन, भृकुटी-कुटिलाननं।।
क वाम-हस्तेन, धृत-केशं च दुर्गया।
व वक्त्रं च, देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत्।।
देव्या दक्षिणं पादं, समं सिंहोपरि स्थितं।
किंचिदूर्ध्वं तथा वाममंगुष्ठं महिषोपरि।।
स्तूयमानं च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेत्।
उग्र-चण्डा प्रचण्डा च, चण्डोग्रा चण्ड-नायिका।।
चण्डा चण्डवती चैव, चण्ड-रूपाति-चण्डिका।
आभिः शक्तिभिरष्टाभिः, सततं परिवेष्टितां।
चिन्तयेज्जगतां धात्रीं, धर्म-कामार्थ-मोक्षदां।।

इसके बाद अपने शिर पर पुष्प देकर मानसोपचारों से देवी की पूजा कर **'विशेषार्घ्य' की स्थापना** कर देवी का पुनः **ध्यान** कर **'घट'** में पुष्प देकर **बिल्व-वृक्ष में देवी का आवाहन** करे—

ॐ ह्रीं भगवति दुर्गे देवि! इहागच्छ इहागच्छ इह तिष्ठ इह तिष्ठ अत्राधिष्ठानं कुरु मम पूजां गृहाण गृहाण।

फिर षोडशोपचारों से **देवी की पूजा** कर **'ॐ बिल्व-वृक्षाय नमः'** से गन्धादि से **बिल्व-वृक्ष की पूजा** कर देवी का **'बोधन'** करे। **पूर्व-दिशा-गामिनी शाखा** को पकड़कर निम्न मन्त्र पढ़े—

अमाबत्ती

आमन्त्रण-अधिवास

नित्य-कर्म कर **सायं-काल** बिल्व-वृक्ष के पास जाकर **'नव-पत्रिका'** को रक्त सूत्र से लपेटकर शुद्धासन पर बैठे। आचमन कर **स्व-शाखोक्त 'स्वस्ति'-वाचन** कर **'सूर्यः सोम०'** इत्यादि का पाठ करे। तब फल-पुष्प-जल-युक्त ताम्र-पात्र को लेकर **'सङ्कल्प'** करे। यथा—

ॐ विष्णुरोम् तत्-सदद्य आश्विन-मासि शुक्ल-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-गोत्रः श्रीअमुक-देव-शर्मा वार्षिक-शरत्कालीन श्रीभगवती- दुर्गा-पूजाङ्ग-भूत बिल्व-वृक्षाधिकरणक श्रीभगवती-दुर्गा-मन्त्रणा- धिवासन-कर्मणी अहं करिष्ये।

इस प्रकार **'सङ्कल्प'** कर उक्त जल को **ईशान कोण** में छोड़कर स्व-शाखोक्त **'सूक्त' का पाठ** करे। तब आसन-शोधन कर **भूत-शुद्धि, गणेशादि-पूजन** कर **'ॐ हां अंगुष्ठाभ्यां नमः'** इत्यादि कराङ्ग-न्यासादि कर **देवी-ध्यान** कर अपने शिर पर पुष्प देकर **मानसोपचारों से देवी का पूजन** कर **विशेषार्घ्य** स्थापित करे। फिर देवी का पुनः ध्यान कर—

'ॐ जयन्ती मङ्गला काली, भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥'

इत्यादि मन्त्र से **षोडशोपचार पूजन** कर यथा-शक्ति मूल-मन्त्र का **'जप'** करे। 'जप'-फल समर्पित कर **प्रणाम**

[illegible]देवो माङ्गल्ये, शिवे सर्वार्थ-साधिके!
[illegible]युम्नश्चा[illegible]क गौरि, नारायणि! नमोऽस्तु ते॥

ॐ ऐं रावणस्य बधार्थाय, रामस्यानुग्रहाय च।
अकाले ब्रह्मणा बोधो, देव्यास्त्वयि कृतः पुरा॥
अहमप्याश्विने षष्ठ्यां, सायाह्ने बोधयामि वै।
शक्रेणापि च सम्बोध्य, प्राप्तं राज्यं सुरालये॥
तस्मादहं त्वां प्रतिबोधयामि, विभूति-राज्य-प्रतिपत्ति-हेतोः।
यथैव रामेण हतो दशास्यस्तथैव शत्रून् विनिपातयामि॥

नवमी में बोधन करे, तो निम्न प्रकार मन्त्र पढ़े—

ॐ इषे मास्यसिते पक्षे, नवम्यामार्द्रयो गतः।
श्री-वृक्षे बोधयामि त्वां, यावत् पूजां करोम्यहम्॥
ॐ ऐं रावणस्य बधार्थाय, रामस्यानुग्रहाय च।
अकाले ब्रह्मणा बोधो, देव्यास्त्वयि कृतः पुरा॥
अहमप्याश्विने तद्वद्, बोधयामि सुरेश्वरीम्।

नवमी में पूर्वाह्न में व **षष्ठी में सायाह्न** में **"बोधन"** करे।

अब तीन **'पुष्पाञ्जलियाँ'** प्रदान करे।

इसके बाद **चार दूर्वाओं** को निम्न मन्त्र से चढ़ावे—

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्तीः परुषः परुषस्परि एवान्ये दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।

फिर निम्न मन्त्र से **सूत्र से तीन बार आवेष्टन** करे—

ॐ सूत्रामाणं पृथिवीं द्यामने हसं सशर्म्माणमदितिं सुप्रणीतिं दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्ती मा [illegible]॥

* * *

तब **'ॐ बिल्व-वृक्षाय नमः'** से पञ्चोपचारों से पूजन कर हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र से **आमन्त्रण** करे—

ॐ **मेरु - मन्दार - कैलाश - हिमवच्छिखरे गिरौ।**
जातः श्रीफल-वृक्ष! त्वमम्बिकायाः सदा प्रियः।।
ॐ **श्री - शैल-शिखरे जात, श्रीफल-निकेतन!**
शाखाच्छेदोद्भवं तद्वं मयागच्छ, पूज्यो दुर्गा-स्वरूपतः।।

फिर स्व-न उक्त **'अधिवास'**-मन्त्रों से **घट, बिल्व-वृक्ष** और **नव-पत्रिका** को स्पर्श कर **प्रतिमा** को पञ्च-गव्य से प्रोक्षित कर **'अधिवासन'** करे। **नाग-पाश-युक्त देवी** के वाम कर में **मङ्गल-सूत्र** बाँधे। तब **'आरती'** करे।

* * *

सप्तमी का कर्म-विधान

आश्विन शुक्ला सप्तमी के दिन प्रातः स्नान कर नित्य-कर्म से निवृत्त हो साधक **बिल्व-वृक्ष** के पास आए। वहाँ **आचमन** कर **सङ्कल्प**-पूर्वक पञ्चोपचारों से **बिल्व-वृक्ष की पूजा** कर **प्रार्थना** करे—

ॐ **बिल्व-वृक्ष! महा-भाग! सदा त्वं शङ्कर-प्रियः।**
गृहीत्वा तव शाखां च, दुर्गा-पूजां करोम्यहम्।।
ॐ **शाखाच्छेदोद्भवं दुःखं, न च कार्यं त्वया प्रभो!**
देवैर्गृहीत्वा ते शाखां, पूज्या दुर्गेति विश्रुतिः।।

अर्थात् हे महाभाग बिल्व-वृक्ष! आप सदा से शङ्कर के प्रिय हैं। आपकी शाखा को लेकर मैं दुर्गा की पूजा करता हूँ। हे प्रभो! शाखा के तोड़ने से होनेवाले कष्ट का दुःख आप न करें क्योंकि देवता भी आपकी शाखा लेकर दुर्गा की पूजा करते हैं, ऐसी ख्याति है।

इस प्रकार **बिल्व-वृक्ष** को प्रसन्न कर **वायव्य कोण** में स्थित दो फलोंवाली शाखा को निम्न मन्त्र से काटे—

ॐ **छिन्दि छिन्दि फट् फट् स्वाहा।**

इस शाखा में **नव-पत्रिकाओं** को बाँधे। **नव-पत्रिकाएँ** ये हैं—१ **रम्भा** (केला), २ **कच्ची** (अरवी), ३ **हरिद्रा** (हल्दी), ४ **जयन्ती** (जैती), ५ **बिल्व** (बेल), ६ **दाडिम** (अनार), ७ **अशोक**, ८ **मानक** (मानकच्चू), ९ **धान**—इनकी पत्तियाँ, **सप्तमी** के पहले ही अर्थात् **षष्ठी** के दिन **सायं-काल** एक छोटे केले के पौधे में अन्य आठ वस्तुओं की शाखाओं को लपेटकर **बिल्व-वृक्ष** के पास रख देना चाहिए।

नव-पत्रिका-युक्त बिल्व-शाखा को, सम्भव हो तो ले जाकर **गङ्गा-जल** में विधि-पूर्वक स्नान करावे अथवा **पूजा-गृह** के आँगन में ही स्नान करा कर उसका **पूजन** करे और **साड़ी** तथा **सिन्दूर** आदि से सुशोभित कर **गणेशजी की मूर्ति** के दाहिनी ओर स्थापित करे।

फिर निम्न मन्त्र का पाठ करे—

ॐ **पुत्रायुर्धन - वृद्ध्यर्थं, नेष्यामि चण्डिकालयम्।**
बिल्व-शाखां समाश्रित्य, लक्ष्मी-राज्यं प्रयच्छ मे।।

ॐ आगच्छ चण्डिके देवि! सर्व-कल्याण-हेतवे।
पूजां गृहाण सुमुखि! नमस्ते शङ्कर-प्रिये॥

फिर **वाद्य-सङ्गीत** के साथ नदी आदि के पास जाकर सुन्दर पीठ के ऊपर **बिल्व-शाखा** को **नव-पत्रिका** के साथ स्थापित कर '**ॐ बिल्व-शाखा-वासिनि दुर्गे! इहागच्छ०**' से आवाहन कर '**ॐ बिल्व-शाखा-वासिन्यै दुर्गायै नमः**' से उसका **पूजन** कर निम्न मन्त्रों से उसे **स्नान** करावे। पहले कुश-तिल-जल आदि लेकर **सङ्कल्प** करे। यथा—

ॐ तत्सदद्याश्विने मासि शुक्ल-पक्षे सप्तम्यां तिथौ अमुक-गोत्रः श्रीअमुक-देव-शर्मा सप्त-जन्मार्जित-पाप-क्षय-कामः श्री भगवती दुर्गा-प्रीति-कामो वा श्रीभगवती-दुर्गा-देवीमहं स्नापयिष्यामि।

महाऽष्टमी व **नवमी** में सङ्कल्प क्रमशः निम्न प्रकार करे—

१ अष्ट - सहस्र - वर्षावच्छिन्न - स्वर्गाधिकरण-स्थिति-कामः।

२ महा-नवम्यां धन-पुत्र-विवर्द्धन-शत-यज्ञ-फल-प्राप्ति-कामः।

अब पहले निम्न मन्त्र से **तैल-हरिद्रा लगाकर स्नान** कराए—

ॐ श्रायन्त इव सूर्यः विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत।
वसूनि जाते जनिमान्योजसा प्रतिभागं नदीधिमः।

फिर **शुद्ध जल** से निम्न मन्त्रों से स्नान कराए—

ॐ कदली-तरु-संस्थाऽसि, विष्णोर्वक्षःस्थलाश्रये!
नमस्ते नव-पत्रि! त्वं, नमस्ते चण्ड-नायिके॥१॥

ॐ कच्चि! त्वं स्थावरस्थासि, सदा सिद्धि-प्रदायिनी।
दुर्गा - रूपेण सर्वत्र, स्नानेन विजयं कुरु॥२॥

ॐ हरिद्रे ! हर - रूपाऽसि, शङ्करस्य सदा प्रिये!
रुद्र - रूपेण देवि! त्वं, सर्व-शान्तिं प्रयच्छ मे॥३॥

ॐ जयन्ति जय - रूपासि, जगतां जय - कारिणि।
स्नापयामीह देवि ! त्वं, जयं देहि गृहे मम॥४॥

ॐ श्री-फल! श्री-निकेतोऽसि, सदा विजय-वर्धन!
देहि मे हित-कामांश्च, प्रसन्नो भव सर्वदा॥५॥

ॐ दाडिम्यघ - विनाशाय, क्षुन्नाशाय सदा भुवि।
निर्मिता फल - कामाय, प्रसीद त्वं हर-प्रिये॥६॥

ॐ स्थिरा भव सदा दुर्गे! अशोके शोक-हारिणि!
मया त्वं पूजिता दुर्गे! मामशोक सदा कुरु॥७॥

ॐ मानो मान्येषु वृक्षेषु, माननीयः सुरासुरैः।
स्नापयामि महा-देवि! मानं देहि नमोऽस्तु ते॥८॥

ॐ लक्ष्मीस्त्वं धान्य-रूपाऽसि, प्राणिनां प्राण-दायिनि!
स्थिरात्यन्तं हि नो भूत्वा, गृहे काम-प्रदा भव॥९॥

इसके बाद उसे **पूजा-गृह** में लाकर निम्न मन्त्रों से **स्नान** करावे। पहले नदी के जल से—

ॐ आत्रेयी भारती गङ्गा, यमुना च सरस्वती।
सरयूर्गण्डकी पुण्या, श्वेत-गङ्गा च कौशिकी॥
भागवती च पाताले, स्वर्गे मन्दाकिनी तथा।
सर्वाः सुमनसो भूत्वा, भृङ्गारैः स्नापयन्तु ताः॥

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु, ब्रह्म - विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणः प्रभुः॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च, भवन्तु विजयाय ते।

ॐ आखण्डलोऽग्निर्भगवान्, यमो वै नैर्ऋतस्तथा।।
वरुणः पवनश्चैव, धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहितः शेषो, दिक्पालाः पांतु ते सदा।।

ॐ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा, पुष्टिः श्रद्धा क्षमा मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः कान्तिः, शान्तिस्तुष्टिश्च मातरः।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु, धर्म - पत्न्यः सु-संयताः।

ॐ आदित्यश्चन्द्रमा भौमो, बुध-जीव-सितार्कजाः।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु, राहुः केतुश्च तर्पिताः।

ॐ ऋषयो मुनयो गावो, देव - मातर एव च।
देव-पत्न्यो धरा नागा, दैत्याश्चाप्सरसांगनाः।।
अस्त्राणि सर्व-शस्त्राणि, राजानो वाहनानि च।।
ओषधानि च रत्नानि, कालस्यावयवाश्च ये।।
सरिताः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
देव - दानव - गन्धर्वा, यक्ष-राक्षस-पन्नगाः।।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु, धर्म - कामार्थ-सिद्धये।

ॐ सिन्धु-भैरव-शोणाद्या, ये नदा भुवि संस्थिताः।
सर्वे सु - मनसो भूत्वा, भृङ्गारैः स्नापयन्तु ते।।

ॐ तक्षकाद्याश्च ये नागाः, पाताल-तल-वासिनः।
सर्वे सु-मनसो भूत्वा, भृङ्गारैः स्नापयन्तु ते।।

अब शङ्ख-जल से—

ॐ सर्वेषामधिपो देव, ईशानो नाम नामतः।
शूल - पाणिर्महा-देवो, भृङ्गारैः स्नापयन्त्विमां।।

तब गङ्गा-जल से—

ॐ मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि, सर्व-पाप-हरं शुभं।
स्वर्ग - स्रोतस्तु वैष्णव्यं, स्नानं भवतु तेन ते।।

उष्ण जल से—

ॐ परमं पवित्रमुष्णं च, वह्नि-ज्योतिः-समन्वितं।
जीवनं सर्व-पापघ्नं, भृङ्गारैः स्नापयन्त्विमां।।

गन्धोदक से—

ॐ गन्धाढ्यं शोभनं चैव, शीतलं सु-मनोहरं।
सर्व-पाप-हरं वारि, भृङ्गारैः स्नापयन्त्विमां।

शुद्ध जल से—

'ॐ आपो हिष्ठा मयो भुव' इत्यादि

ॐ शन्नो देवीरभीष्टये शन्नो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः।

तदनन्तर तत्तत् मन्त्रों से शोधन कर **पञ्च-गव्य** को एक कर उन्हीं मन्त्रों से स्नान कराए।

ॐ मधुवातेति—मधु से

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पुष्णो हस्ताभ्यां
—कुशोदक से

अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्म-वर्चसायाभिषिञ्चामि।
सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामि।
इन्द्रियस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चामि।
—पुष्पोदक से।

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य-दातये निहोता सत्सि बर्हिषि
—फलोदक से

ॐ नारायण्यै विद्महे भगवत्यै धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात्—
इक्षु-रस-सागरोदक से।

ॐ हां हृदयाय नमः—मधु से।

ॐ हीं शिरसे स्वाहा—घृत से।

ॐ हूं शिखायै वषट्—दुग्ध से।

ॐ हैं कवचाय हुम्—नारिकेल-जल से।

ॐ हौं नेत्र-त्रयाय वौषट्—ईख के रस से।

ॐ हः अस्त्राय फट्—दही से।

ॐ हीं अम्बिकायै नमः—तिल-तैल से

ॐ हीं चामुण्डायै नमः—विष्णु-तैल से।

ॐ हीं चण्डिकायै नमः—शिशिरोदक से।

ॐ हीं नमः—राज-द्वार की मिट्टी से।

ॐ हूं नमः—चतुष्पथ की मिट्टी से।

ॐ हैं नमः—वृष-शृङ्ग की मिट्टी से।

ॐ हः नमः—गज-दन्त की मिट्टी से।

ॐ दुर्गायै नमः—वेश्या-द्वार की मिट्टी से।

ॐ हीं श्रीं नमः—नदी के दोनों किनारों की मिट्टी से।

ॐ ऐं श्रीं नमः—गङ्गा की मिट्टी से।

ॐ ऐं हीं श्रीं नमः—सर्व-तीर्थों की मिट्टी से।

ॐ या ओषधी सोमराज्ञीर्बह्वीः शत-विचक्षणा।
तामामसि त्वमुत्तमारं कामाय संहृदे—सर्वौषधि और
महौषधि से।

पञ्च-कषाय-युक्त सहस्र-धारा-जल से—

ॐ सागराः सरितः सर्वाः, स्वर्ग-स्रोता नदास्तथा।
सर्वौषधीभिः पापघ्नाः, सहस्रैः स्नापयन्तु ते॥
लवणेक्षु - सुरा-सर्पिर्दधि-दुग्ध-जलैस्तथा।
सहस्र-धारया देवीं, स्नापयामि महेश्वरीं॥

तब चार घड़ों से—

ॐ अग्निमीड़े पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्न-धाततम्॥१॥ ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायवः स्थः देवो वः सविताप्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे॥२॥ ॐ अग्न आयाहि वीतते गृणानो हव्य-दातये निहोता सत्सि-बर्हिषि॥३॥ ॐ शन्नो देवीरभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः॥४॥

फिर आठ कलशों से स्नान कराए। पहले गङ्गा-जल से पूर्ण कलश से—

ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु, ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
व्योम-गङ्गाम्बु-पूर्णेन, आद्येन कलशेन तु॥१
(मालव राग, विजय वाद्य)

तब वृष्टि-जल से पूर्ण कलश से—

ॐ मरुतश्चाभिषिञ्चन्तु, भक्तिमन्तः सुरेश्वरि!
मेघ - मुक्ताम्बु-पूर्णेन, द्वितीय-कलशेन तु॥२
(ललित राग, दुन्दुभि वाद्य)

फिर सरस्वती-जल से पूर्ण कलश से—

ॐ सारस्वतेन तोयेन, सम्पूर्णेन सुरोत्तमे!
विद्याधराश्चाभिषिञ्चन्तु, तृतीय-कलशेन तु॥३
(विभाष राग, दुन्दुभि वाद्य)

तब सागर-जल से पूर्ण कलश से—

ॐ **शक्राद्याश्चाभिषिञ्चन्तु, लोक-पालाः समागताः।**
सागरोदक - पूर्णेन, चतुर्थेन कलशेन तु॥४

(भैरव राग, भीम वाद्य)

पद्म-रज-मिश्रित जल से पूर्ण कलश से—

ॐ **वारिणा परिपूर्णेन, पद्म - रेणु-सुगन्धिना।**
पञ्चमेनाभिषिञ्चन्तु, नागाश्च कलशेन तु॥५

(कोड़ा राग, इन्द्राभिषेक वाद्य)

निर्झर-जल से पूर्ण कलश से—

ॐ **हिमवद्धेम-कूटाद्याश्चाभिषिञ्चन्तु पर्वताः।**
निर्झरोदक - पूर्णेन, षष्ठेन कलशेन तु॥६

(वाराड़ी राग, शङ्ख वाद्य)

सर्व-तीर्थों के जल से पूर्ण कलश से—

ॐ **सर्व - तीर्थाम्बु-पूर्णेन, कलशेन सुरेश्वरि!**
सप्तमेनाभिषिञ्चन्तु, ऋषयः सप्त-खेचराः॥७

(वसन्त राग, पञ्च-शब्द वाद्य)

शुद्ध जल से पूर्ण कलश से—

ॐ **सर्व - तीर्थाम्बु-पूर्णेन, कलशेन सुरेश्वरि!**
अष्ट-मङ्गल-संयुक्ते, दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते॥८

(घानसी राग, विजय वाद्य)

इस प्रकार स्नान कर करे **'पत्री-प्रवेश का सङ्कल्प'** करे। यथा—

ॐ **तत्सदित्यादि श्रीदुर्गा-प्रीति-कामः वार्षिक-शरत्-कालीन-दुर्गा-महा-पूजाङ्ग-भूत गृह-मध्याधिकरणक पत्री-प्रवेश-कर्माहं करिष्ये।**

इस प्रकार सङ्कल्प कर **'ॐ भूतेभ्यो नमः'** से भूतादि का आवाहन कर पाद्यादि से पूजन कर माष-भक्त बलि लेकर—

ॐ **भूताः प्रेताः पिशाचाश्च, ये वसन्त्यत्र भू-तले।**
ते गृह्णन्तु मया दत्तो, बलिरेषः प्रसाधितः॥
पूजिता गन्ध - पुष्पाद्यैर्बलिभिस्तर्पितास्तथा।
देशादस्माद् विनिःसृत्य, पूजां पश्यन्तु मत्कृतां॥

उक्त मन्त्र पढ़कर **'एष माष-भक्त-बलिं ॐ भूतादिभ्यो नमः'** से उसे प्रदान करे। तब **'ॐ अस्त्राय फट्'** से सात बार अभिमन्त्रित लाल-चन्दन-सिद्धार्थ-भस्म-दूर्वा-कुश और अक्षत लेकर—

ॐ **अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भूमि-पालकाः।**
भूतानामविरोधेन, दुर्गा - पूजां करोम्यहम्।
ॐ **वेतालाश्च पिशाचाश्च, राक्षसाश्च सरीसृपाः।**
अपसर्पन्तु ते सर्वे, चण्डिकास्त्रेण ताडिताः॥

उक्त मन्त्रों से उन्हें **पूजा-स्थल** में बिखेर कर **भूतों का अपसारण** करे। तब **'नव-पत्रिका'** को वस्त्र-सिन्दूरादि से सजाकर **'ॐ बिल्व-शाखा-वासिन्यै दुर्गायै नमः'** से **पाद्यादि-पूजन** कर उसे **देवी-स्वरूप ध्यान** कर अपने सिर पर दूर्वाक्षत छोड़े। फिर **प्रतिमा** के आसन को स्पर्श कर—

ॐ **चण्डिके! चल चल चालय चालय दुर्गे! पूजालयं प्रविश।**
ॐ **गम्यतां मद् - गृहे देवि! अष्टाभिः शक्तिभिः सह।**
पूजां गृहाण! सुमुखि सर्व-कल्याण-हेतवे॥

उक्त मन्त्र पढ़कर **प्रतिमा का सञ्चालन** कर नृत्य-गीत-वाद्यादि के साथ **देवी की वेदी के ऊपर स्थापना** करे। तदनन्तर **'ॐ ऐं ह्रीं स्यां स्थीं त्वमम्बिके! स्थिरा भव'** से **स्थिरी-करण** कर पञ्च-गव्य का संशोधन कर सामान्य पूजा-क्रम के अनुसार **सामान्यार्घ्य-स्थापन, द्वार-पूजा, विघ्नोत्सारण, आसन-शोधन, भूत-शुद्धि, मातृका-न्यासादि** कर **'ह्रीं'** से तीन बार **प्राणायाम** करे। फिर **'पीठ'-न्यास** करे। यथा—

हृदये—**आं प्रभायै नमः, ईं मायायै नमः, ऊं जयायै नमः, एं सूक्ष्मायै नमः, ऐं विशुद्धायै नमः, ओं नन्दिन्यै नमः, औं सुप्रभायै नमः, अं विजयायै नमः।**

मध्ये—**अः सर्व-सिद्धिदायै नमः।**

तदुपरि—**ॐ वज्र-नख- दंष्ट्रायुधाय महा-सिंहाय हुं फट् नमः।**

इसके बाद मूल-मन्त्र से **'व्यापक'-न्यास** कर विनियोगादि करे—

श्रीदुर्गा-मन्त्रस्य नारद ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदुर्गा देवता, मम सर्वाभीष्ट-सिद्धयर्थं दुर्गा-पूजने विनियोगः।

शिरसि नारदाय ऋषये नमः। मुखे गायत्र्यै छन्दसे नमः। हृदि श्रीदुर्गायै देवतायै नमः। सर्वाङ्गे मम सर्वाभीष्ट-सिद्धयर्थे दुर्गा-पूजने विनियोगाय नमः।

तदनन्तर **'गणेश-घट'** की स्थापना कर **'सर्वतोभद्र-मण्डल'** में स्व-शाखोक्त **'देवी-घट'** की स्थापना कर **तीर्थों का आवाहन** करे—

ॐ गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः, समुद्राश्च सरांसि च।
आयान्तु यजमानस्य, दुरित - क्षय-कारकाः।।
ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति!
नर्मदे सिन्धु कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

तब गज, अश्व, रथ, बल्मीक, नदी, सङ्गम और जलाशय की **सप्त-मृत्तिका** तथा **सर्वौषधि, बिल्वादि फल, गन्ध-पुष्प-दूर्वाक्षत** को **'नमः'** मन्त्र से **घट** में छोड़े। इसके बाद **प्रतिमा** को निम्न मन्त्रों से **चक्षुर्दान** करे—

ऊर्ध्व नेत्र में—**ॐ कया नश्चित्र आभुव दूती सदा वृधः सखा। कयः शचिष्ठया वृता।**

वाम नेत्र में—**आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम-वृष्ण्यम्। भवा राजस्य सङ्गथे।**

दक्ष नेत्र में—**ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणास्याग्नेः। आप्राद्यावा पृथिवी अन्तरीक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।**

प्रतिमाओं में **चक्षुर्दान की अन्य विधि** यह है कि पहले आवाहन हेतु **कूर्म (कच्छप)-मुद्रा** में पुष्प लेकर ध्यान करे—

ॐ जटा - जूट - समायुक्तामर्द्धेन्दु-कृत-शेखराम्।
लोचन - त्रय-संयुक्तां, पूर्णेन्दु-सदृशाननाम्।
तप्त-काञ्चन-वर्णाभां, सुप्रतिष्ठां सुलोचनाम्।
नव - यौवन-सम्पन्नां, सर्वाभरण-भूषिताम्।।
सुचारु-दशनां तीक्ष्णां, पीनोन्नत-पयोधराम्।
त्रिभङ्ग-स्थान-संस्थानां, महिषासुर-मर्दिनीम्।।
मृणालायत - संस्पर्श-दश-बाहु-समन्विताम्।

त्रिशूलं दक्षिणे ध्येयं, खड्गं चक्रं क्रमादधः।।
तीक्ष्ण-बाणं तथा शक्तिं, दक्षिणे सन्निवेशयेत्।
खेटकं पूर्ण - चापं च, पाशमंकुशमेव च।।
घण्टां वा परशुं वापि, वामतः सन्निवेशयेत्।
अधस्तान्महिषं तद्वद्, वि-शरस्कं प्रदर्शयेत्।।
शिरश्छेदोद्भवं तद्वद् - दानवं खड्ग-पाणिनं।
हृदि शूलेन निर्भिन्नं, निर्यदन्त्र - विभूषितं।।
रक्त - रक्ती-कृताङ्गं च, रक्त-विस्फुरितेक्षणं।
वेष्टितं नाग - पाशेन, भृकुटी-कुटिलाननं।।
सपाश - वाम-हस्तेन, धृत-केशं च दुर्गया।
वमद्रुधिर - वक्त्रं च, देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत्।।
देव्यास्तु दक्षिणं पादं, समं सिंहोपरि स्थितं।
किंचिदूर्द्धं तथा वाममंगुष्ठं महिषोपरि।।
स्तूयमानं च तद्रूपममरैः सन्निवेशयेत्।
उग्र-चण्डा प्रचण्डा च, चण्डोग्रा चण्ड-नायिका।।
चण्डा चण्डवती चैव, चण्ड-रूपाति-चण्डिका।
आभिः शक्तिभिरष्टाभिः, सततं परिवेष्टितां।
चिन्तयेज्जगतां धात्रीं, धर्म-कामार्थ-मोक्षदां।।

इस प्रकार ध्यान कर अपने शिर पर पुष्प देकर **'मानस पूजन'** करे। फिर **'विशेषार्घ्य की स्थापना'** कर **'पीठ'-पूजा** करे—

मण्डल के मध्य में **पीठ-देवता का आवाहन** करे। पीठ-न्यासोक्त क्रम से **'ॐ आधार-शक्तये नमः'** इत्यादि से **'हीं ज्ञानात्मने नमः'** तक पूजा कर **'ॐ आं प्रभायै नमः, ईं मायायै नमः, ऊं जयायै नमः, एं सूक्ष्मायै नमः, ऐं विशुद्धायै नमः, ओं नन्दिन्यै नमः, औं सुप्रभायै नमः, अं विजयायै नमः, अः सर्व-सिद्धिदायै नमः।'** तदुपरि **'वज्र-नख-दंष्ट्रायुधाय महा-सिंहाय हुँ फट् नमः।'** तब पुनः ध्यान कर आवाहनी आदि **पञ्च-मुद्राएँ** दिखाता हुआ। आवाहनादि करे। यथा—

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवति दुर्गे, स्वकीय-गण-सहिते! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुध्यस्व इह सन्निरुध्यस्व, अत्राधिष्ठानं कुरु, मम पूजां गृहाण गृहाण।

तब मूल-मन्त्र से **षडङ्ग-न्यास** कर प्रतिमा को छूते हुए पढ़े—

ॐ आगच्छ मद्-गृहे देवि! अष्टाभिः शक्तिभिः सह।
पूजां गृहाण विधिवत्, सर्व-कल्याण-कारिणि।।

ॐ एह्येहि भगवत्यम्ब ! शत्रु - क्षय - जय - प्रदे!
भक्तितः पूजयामि त्वां, नव - दुर्गे! सुरार्चिते।।

ॐ दुर्गे देवि! समागच्छ, सान्निध्यमिह कल्पय।
यज्ञ - भागं गृहाण त्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह।।

ॐ शारदीयामिमां पूजां, करोमि कमलेक्षणे!
आज्ञापय महा - देवि! दैत्य - दर्प-विनाशिनि।।

ॐ संसारार्णव - दुष्पारे, सर्व - मार-निकृन्तिनि !
त्रायस्व वरदे देवि ! नमस्ते शङ्कर - प्रिये।।

ॐ या देवा याश्च देव्यश्च, चलितायां चलन्ति हि।
आवाहयामि तान् सर्वान्, चण्डिके! परमेश्वरि।।

ॐ प्राणान् रक्ष यशो रक्ष, पुत्र - दार-धनं सदा।
सर्व-रक्षा-करी यस्मात्, त्वं हि देवि! जगत्-प्रिये।।

ॐ प्रविश्य तिष्ठ यज्ञेऽस्मिन्, यावत् पूजां करोम्यहम्।
मेनानन्द - करे देवि! सर्व-सिद्धिं च देहि मे।।

ॐ आगच्छ चण्डिके देवि! सर्व - कल्याण-हेतवे।
पूजां गृहाण सुमुखि! नमस्ते हर - वल्लभे।।

ॐ आवाहयामि देवि! त्वां, मृण्मये श्रीफलेऽपि च।
कैलाश - शिखरात् देवि! विन्ध्यार्द्रेर्हिम-पर्वतात्।।

ॐ आगत्य विल्व-शाखायां, चण्डिके! सन्निधिं कुरु।
स्थापितासि मया देवि! पूजये त्वां प्रसीद मे।।

ॐ देवि चण्डात्मिके चण्डि! चण्ड-विग्रह-कारिणि!
विल्व-शाखां समाश्रित्य, तिष्ठ देवि! गणैः सह।।

ॐ देवि! त्वं जगतां मातः, सृष्टि - संहार-कारिणि!
पत्रिकासु समस्तासु, सान्निध्यमिह कल्पय।।

ॐ पल्लवैश्च फलोपेतैः, शाखाभिः सुर-नायिके!
पल्लवे संस्थिते देवि! पूजां गृह्ण प्रसीद मे।।

ॐ आवाहितासि देवि! त्वं, मृण्मये श्रीफलेऽपि च।।
स्थिरात्यन्तं हि नो भूत्वा, गृहे काम-प्रदा भव।

ॐ चण्डि! त्वं चण्ड - रूपासि, सुर-तेजो महाबले!
प्रविश्य तिष्ठ यज्ञेऽस्मिन्, यावत् पूजां करोम्यहं।।

प्राण-प्रतिष्ठा

पुष्प-युक्त कुश को **प्रतिमा** के मस्तक पर रखकर मूल-मन्त्र का पाँच बार **'जप'** करे। तब **'ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः'** से सर्वाङ्ग को स्पर्श करे। फिर अंगुष्ठ-अनामिका से **प्रतिमा** के दोनों कपोलों को स्पर्श कर मूल-मन्त्र का उच्चारण कर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः श्रीदुर्गायाः प्राणा इह प्राणाः, आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः श्री दुर्गायाः जीव इह स्थितः, आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः श्रीदुर्गायाः सर्वेन्द्रियाणि, आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः श्रीदुर्गायाः वाङ्-मनश्चक्षुः- श्रोत्र-घ्राण-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

तदनन्तर **लेलिहान-मुद्रा** से **देवी** के हृदय पर हाथ देकर निम्न मन्त्र पढ़े—

'ॐ मनोजूतिरिति ॐ अस्यै प्राणा' यह कहकर निम्न पाँच मन्त्रों का जप करे—

ॐ हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्ष सद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वर सद्-व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं वृहत्।।१

ॐ प्रतद्विष्णुः स्तुवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
अस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वाः।।२

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु, त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिंचतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते।।३।।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।४।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि-वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।५।।

इसके बाद इसी प्रकार **गणेश, लक्ष्मी, सरस्वती, कार्तिकेय, महा-सिंह, महिषासुरं, नाग-पाश, मूषिक, मयूर, जया, विजया, चित्रस्थ शिवा की 'प्राण-प्रतिष्ठा'** करे।

तब **गणेश-घट** में **'खर्व'** इत्यादि **ध्यान** कर **आवाहन-पूर्वक गणेश की षोडशोपचारों से पूजा** करे। फिर **सूर्य, विष्णु, शिव, दूर्गा की पूजा** पञ्चोपचारों से कर पूर्व-वत् **दुर्गा देवी का ध्यान** कर उनका **पूजन षोडशोपचारों** से करे। यथा—

'वं एतस्मै रजतासनाय नमः' से तीन बार अभ्युक्षण कर **'एतदधिपतये विष्णवे नमः एतत् सम्प्रदानाय ह्रीं दुर्गायै नमः'**

कहकर हाथ जोड़ निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ संयुक्तं हेम-रत्नादि-ताम्र-पित्तल-सीसकैः।
दार्वादि-रचितं रम्यमासनं प्रति-गृह्यताम्।।

'स्वागतं' से आसन का स्पर्श कर कहे—

ॐ कृतार्थोऽनुगृहीतोऽस्मि, सफलं जीवितं मम।
आगतासि यतो दुर्गे! माहेश्वरि! मदाश्रमम्।।

पूर्व-वत् पाद्य देकर—

ॐ पाद्यं गृह्ण महा-देवि! सर्व-दुःखापहारकं।
त्रायस्व वरदे देवि! नमस्ते शङ्कर-प्रिये।।

अर्घ्य—दूर्वाक्षत-समायुक्तं, बिल्व-पत्रं तथापरं।
शोभनं शङ्ख-पात्रस्थं, गृहाणार्घ्यं हर-प्रिये।।

ॐ नाना-तीर्थोद्भवं वारि, चन्दनेन सुवासितं।
गृहाणार्घ्यमिदं देवि। विश्वेश्वरि! नमोऽस्तु ते।।

जाति-कङ्कोल-लवङ्ग सहित आचमनीय—

ॐ मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि, सर्व-पाप-हरं शुभं।
गृहाणाचमनीयं त्वं, मया भक्त्या निवेदितं।।

ॐ इमा आपो मया भक्त्या, तव पाणि-तलेऽर्पिताः।
आचमय महा-देवि! प्रीता शान्तिं प्रयच्छ मे।।

मधुपर्क— ॐ मधुपर्कं महा-देवि! ब्रह्माद्यैः परिकल्पितं।
मया निवेदितं भक्त्या, गृहाण परमेश्वरि।।

स्नानीय जल—जलं च शीतलं स्वच्छं, नित्यं शुद्धं मनोरमं।
स्नानार्थं ते मया भक्त्या, कल्पितं देवि! गृह्यतां।।

वस्त्र—ॐ बहु-तन्तु-समायुक्तं, पट्ट-सूत्रादि-निर्मितं।
वासो देवि! सुशुक्लं च, गृहाण वर-वर्णिनि।।

ॐ तन्तु-सन्तान - सन्नद्धं, रञ्जितं राग-वस्तुना।
दुर्गे देवि! भज प्रीतिं, वाससे परिधीयतां।।

आभरण— ॐ दिव्य-रत्न-समायुक्ता, वह्नि-भानु-सम-प्रभाः।
गात्राणि शोभयिष्यन्ति, अलङ्काराः सुरेश्वरि।।

गन्धं—ॐ शरीरं ते न जानामि, चेष्टां नैव च नैव च।
मया निवेदितान् गन्धान्, प्रतिगृह्य विलिप्यतां।।

पुष्पं—ॐ पुष्पं मनोरमं दिव्यं, सुगन्धिं देव-निर्मितं।
ह्यमद्भुतमाघ्रेयं, देवि ! दत्तं प्रगृह्यतां।।

धूप— ॐ वनस्पति-रसो दिव्यो, गन्धाढ्यः सुर-भोजनः।
मया निवेदितो भक्त्या, धूपोऽयं प्रति-गृह्यतां।।

दीप— ॐ अग्नि-ज्योती रवि-ज्योतिश्चन्द्र-ज्योतिस्तथैव च।
ज्योतिषामुत्तमे दुर्गे! दीपोऽयं प्रतिगृह्यतां।।

नेत्राञ्जन— ॐ नमस्ते सर्व-देवेशि! नमस्ते शङ्कर-प्रिये!
चक्षुषामञ्जनं ह्यं, देवि! दत्तं प्रगृह्यतां।।

नैवेद्य— ॐ आमान्नं घृत-संयुक्तं, नाना द्रव्य-समायुक्तं।
मया निवेदितं भक्त्मा, गृहाण परमेश्वरि।।

फल-मूल नैवेद्य—ॐफल-मूलानि सर्वाणि, ग्राम्यारण्यानि यानि च।
नाना - विध सुगन्धीनि, गृह्ण देवि! ममाचिरं।।

रचना— ॐ नाना-फल-समायुक्तं, नाना-वर्ण-प्रपूरितां।
रचनां ते प्रयच्छामि, गृहाण परमेश्वरि।।

अन्नं—ॐ अन्नं चतुर्विधं देवि! रसैः षड्भिः समन्वितं।
उत्तमं प्राणदं चैव, गृहाण मम भावतः।।

परमान्न— ॐ गव्य-सर्पिः-समायुक्तो, नाना-मधुर-संयुक्तः।
(पायस) मया निवेदितो भक्तया, पायसः प्रतिगृह्यतां।।

पिष्टक— ॐ अमृतैः रचितं दिव्यं, नाना-रूप-विनिर्मितं।
पिष्टकं विविधं देवि! गृहाण मम भावतः।।

मधु— ॐ कुबेरेण पुरा दत्तं, रत्न-पात्र-प्रपूरितं।
अक्षयं सर्वदा देवि! त्वयेदं मधु गृह्यतां।।

मोदक— ॐ मोदकं स्वाद-संयुक्तं, शर्करादि-विनिर्मितं।
सुरम्यं मधुरं भोज्यं, देवि! तत् प्रतिगृह्यतां।।

लड्डूक— ॐ लड्डूकं षड्-रसैर्युक्तं, दुग्ध-खण्डादि-विनिर्मितं।
सुमिष्टं मधुरं देवि! गृह्यतां परमेश्वरि।।

पानीय— ॐ जलं च शीतलं स्वच्छं, सुगन्धिं सु-मनोहरं।
मया निवेदितं भक्त्या, पानाय प्रतिगृह्यतां।।

ताम्बूल— ॐ फल - पत्र - समायुक्तं, कर्पूरेण सुवासितं।
मया निवेदितं भक्त्या, ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां।।

अष्टोत्तर-शत दूर्वा—ॐ नमस्ते सर्वगे देवि! नमस्ते सुख-मोक्षदे!
दूर्वा गृहाण देवि! त्वं, मां निस्तारय सर्वतः।।

श्रीफल-पत्र-माल्य—ॐ अमृतोद्भवं श्रीयुक्तं, महादेव-प्रियं सदा।
पवित्रं ते प्रयच्छामि, श्रीफलोऽयं सुरेश्वरि।।

पुष्प-माल्य— ॐ सूत्रेण ग्रथितं माल्यं, नाना-पुष्प-समन्वितं।
श्रीयुक्तं लम्बमानं च, गृहाण परमेश्वरि।।

शङ्खाभरण— ॐ महोदधि-समुद्भूताः, सर्व-देवी-प्रियाः सदा।
मया निवेदिताः शङ्ख-वलया भूषणाय ते।।

स्वर्णाभरण— ॐ स्वर्णादीनामलङ्कारं, भूषणानामनुत्तमं।
हार - कुण्डल - केयूर - नूपुरादि गृहाण मे।।

सिन्दूर— ॐ रञ्जनं सर्व-लोकानां, श्रिया परमया युतं।
सिन्दूर - तिलकं तेऽस्तु, ललाट-तट-मण्डनं।।

वाद्य— ॐ आनन्द-जनकं देवि! शक्रादीनां जय-प्रदं।
उत्साह - जनकं रम्यं, वाद्यं तव निवेदितं।।

पुष्पाञ्जलि-त्रय—ॐ चण्डिकायै विद्महे भगवत्यै धीमहि तन्नो
गौरी प्रचोदयात्।

अब सिन्दूर-तिलक देकर **दर्पण** दिखाए। तब **'ध्यायेन्नित्यं०'** इत्यादि से **शिव का ध्यानावाहन** कर षोडशोपचारों से उनकी **पूजा** कर उन्हें **प्रणाम** करे।

'पाशाक्षा०' इत्यादि से लक्ष्मी का ध्यानावाहन कर षोडशोपचारों से उनकी **पूजा** कर **'ॐ विश्व-रूपस्य भार्यासि०'** इत्यादि से उन्हें प्रणाम करे।

'तरुण-शकलमिन्दो०' इत्यादि से सरस्वती का ध्यानावाहन कर षोडशोपचारों से उनकी **पूजा** कर **'ॐ सरस्वति! महाभागे०'** इत्यादि से उन्हें प्रणाम करे।

इसके बाद **कार्तिकेय का ध्यान** करे। यथा—

ॐ **कार्तिकेयं महा-भागं, मयूरोपरि-संस्थितं।**
तप्त-काञ्चन-वर्णाभं, शक्ति-हस्तं वर-प्रदं।।
द्वि-भुजं शत्रु-हन्तारं, नानालङ्कार-भूषितं।
प्रसन्न - वदनं देवं, सर्व-सेना-समावृतं।।

आवाहन कर उनका षोडशोपचार-पूजन कर निम्न मन्त्रों से उन्हें प्रणाम करे—

ॐ **कार्तिकेय! नमस्यामि, गौरी-पुत्रं सुत-प्रदम्।**
षडाननं महा - भागं, दैत्य-दर्प-निषूदनीम्।।

तदनन्तर **'ॐ वज्र-नख-दंष्ट्रायुधाय महा-सिंहाय हुं फट् नमः'** से **महा-सिंह का ध्यानावाहन** कर **षोडशोपचार से पूजन** कर उन्हें **प्रणाम** करे।

फिर **नाग-पाश, मूषिक, मयूर, जया, विजया** का आवाहन कर प्रत्येक का **षोडशोपचार-पूजन** कर उन्हें **प्रणाम** करे।

अब निम्न मन्त्रों से पञ्चोपचारों से **'नव-पत्रिका'**-गत प्रत्येक वृक्ष की अलग-अलग **पूजा** कर प्रत्येक को नमस्कार करे। यथा—

१ **ॐ रम्भाधिष्ठात्रि ब्रह्माणि! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखीकृता भव, ॐ रम्भाधिष्ठात्र्यै ब्रह्माण्यै नमः गन्धं समर्पयामि** इत्यादि।

ॐ **दुर्गे देवि ! समागच्छ, सान्निध्यमिह कल्पय।**
रम्भा-रूपेण सर्वत्र, शान्तिं कुरु नमोऽस्तु ते।।

२ **ॐ कच्च्यधिष्ठात्रि कालिके! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव, ॐ कच्चधिष्ठात्र्यै कालिकायै नमः गन्धं समर्पयामि** इत्यादि।

ॐ **महिषासुर-युद्धेषु, कच्ची-भूतासि सुव्रते!**
मम चानुग्रहार्थाय, आगताऽसि हरि-प्रिये।।

३ **ॐ हरिद्राधिष्ठात्रि दुर्गे! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव, ॐ हरिद्राधिष्ठात्र्यै दुर्गायै नमः गन्धं समर्पयामि** इत्यादि।

ॐ **हारिद्रे वरदे देवि! उमा-रूपाऽसि सुव्रते!**
मम विघ्न-विनाशाय, पूजां गृह्ण प्रसीद मे।।

४ **ॐ जयन्त्यधिष्ठात्रि कार्तिकि! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह**

सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव, ॐ जयन्त्यधिष्ठात्र्यै कार्तिक्यै नमः गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ निशुम्भ - शुम्भ-मथने! इन्द्रैर्देव-गणैः सह।
जयन्ति! पूजिताऽसि, त्वमस्माकं वरदा भव।।

५ ॐ विल्वाधिष्ठात्रि शिवे! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव, ॐ विल्वाधिष्ठात्र्यै शिवायै नमः गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ महादेव - प्रिय - करो, वासुदेव-प्रियः सदा।
उमा-प्रीति-करो वृक्ष! बिल्व-रूप! नमोऽस्तु ते।।

६ ॐ दाडिम्यधिष्ठात्रि रक्त-दन्तिके! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव, ॐ दाडिम्यधिष्ठात्र्यै रक्त-दन्तिकायै नमः गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ दाडिमि! त्वं पुरा युद्धे, रक्त-बीजस्य सम्मुखे।
उमा-कार्यं कृतं यस्मादस्माकं वरदा भव।।

७ ॐ अशोकाधिष्ठात्रि शोक-रहिते! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव, ॐ अशोकाधिष्ठात्र्यै शोक-रहितायै नमः गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ हर-प्रीति-करो वृक्षो, ह्यशोकः शोक-नाशनः।
दुर्गा-प्रीति-करो यस्मान्मामशोकं सदा कुरु।।

८ ॐ मानाधिष्ठात्रि चामुण्डे! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखी-कृता भव, ॐ मानाधिष्ठात्र्यै चामुण्डायै नमः गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ यस्य पत्रे वसेद् देवी, मान-वृक्षः शची-प्रियः।
मम चानुग्रहार्थाय, पूजां गृह्ण प्रसीद मे।।

९ ॐ धान्याधिष्ठात्रि महा-लक्ष्मि! इहागच्छ इहागच्छ, इह तिष्ठ इह तिष्ठ, इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निरुद्धस्व, इह सम्मुखीकृता भव, ॐ धान्याधिष्ठात्र्यै महा-लक्ष्म्यै नमः गन्धं समर्पयामि इत्यादि।

ॐ जगतः प्राण - रक्षार्थं, ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
उमा-प्रीति-करं धान्यं, तस्मात् त्वं रक्ष मां सदा।।

अन्त में 'नव-पत्रिका-वासिन्यै दुर्गायै नमः' मन्त्र से षोडशोपचार-पूजन कर निम्न मन्त्र से **प्रणाम** करे—

ॐ पत्रिके नव - दुर्गे! त्वं, महादेव-मनोरमे!
पूजां समस्तां संगृह्य, रक्ष मां त्रि-दशेश्वरि।।

आवरण-पूजा

'ॐ आवरण-देवता इहागच्छ' से आवाहन कर 'ॐ दुर्गे हृदयाय नमः' से पञ्चोपचार-पूजन करे। इसी प्रकार 'ॐ दुर्गे शिरसे स्वाहा नमः, ॐ दुर्गायै शिखायै वषट् नमः, ॐ भूत-रक्षणि कवचाय हुम् नमः, ॐ दुर्गे दुर्ग रक्षणि नेत्र-त्रयाय वौषट् नमः, ॐ दुर्गे दुर्ग रक्षणि अस्त्राय फट् नमः, ॐ जं जयायै नमः, ॐ विं विजयायै नमः, ॐ कीं कीर्त्यै नमः, ॐ प्रीं प्रीत्यै नमः, ॐ प्रं प्रभायै नमः, ॐ श्रं श्रद्धायै नमः, ॐ

श्रुं श्रुत्यै नमः, ॐ मं मेधायै नमः, ॐ शङ्खाय नमः, ॐ चक्राय नमः, ॐ गदायै नमः, ॐ खड्गाय नमः, ॐ पाशाय नमः, ॐ अंकुशाय नमः, ॐ चापाय नमः, ॐ शराय नमः' से पूजन कर **'ॐ इन्द्राय सवज्राय सवाहनाय स-परिवाराय नमः'** से और इसी प्रकार **'अग्नये स-शक्तये, यमाय स-दण्डाय, निर्ऋतये स-खड्गाय, वरुणाय स-पाशाय, वायवे सांकुशाय, कुबेराय स-गदाय, ईशानाय स-शूलाय, ब्रह्मणे स-पद्माय, अनन्ताय स-चक्राय नमः'** से पूजन कर मूल-मन्त्र से **पाँच पुष्पाञ्जलियाँ** देकर अष्टोत्तर-सहस्र बार मूल-मन्त्र का **जप** कर **'ॐ गुह्याति०'** से जप-समर्पण कर **'सर्व-मङ्गल०'** इत्यादि से साष्टाङ्ग प्रणाम कर **नीराजन** करे। तब **कल्पारम्भ-घट** में पञ्चोपचार से देवी का **पूजन** करे।

* * *

अष्टमी का कर्म-विधान

प्रातःकृत्य कर आचमन से **न्यास**-पर्यन्त कर्म कर देवी का **'ध्यान'** कर दर्पण के प्रतिबिम्ब में तीन पुष्पाञ्जलियाँ देकर बिल्व-शाखा-रूप दन्त-काष्ठ निम्न मन्त्र से प्रदान करे—

ॐ आयुर्बलं यशो - वर्चः, प्रजा-पशु-वसूनि च।
ब्रह्म-विद्यां च मेधां च, त्वन्नो धेहि वनस्पते।।

फिर उष्णोदक— **'ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः'** से निवेदन कर महा-स्नान का सङ्कल्प कर **सप्तमी-पूजा-विधि** के अनुसार स्नान कराए। तब **देवी का ध्यान** कर मानसोपचारों से पूजा कर **विशेषार्घ्य**-स्थापन से **'नव-पत्रिका'-पूजन** तक **सप्तमी-विधान**-वत् कर **देवी की आवरण पूजा** करे।

पूर्व-दल में—**'ॐ उग्र-चण्डे इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ॐ ह्रीं श्रीं उग्र-चण्डायै नमः'** से पञ्चोपचार पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ उग्र - चण्डा तु वरदा, मध्याह्नार्क-सम-प्रभा।
सा मे सदाऽस्तु वरदा, तस्यै नित्यं नमो नमः।।

आग्नेय-दल में—**'ॐ प्रचण्डे इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ॐ ह्रीं श्रीं प्रचण्डायै नमः'** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ प्रचण्डे पुत्रदे! नित्यं, प्रचण्ड-गण-संस्थिते!
सर्वानन्द-करे देवि! तुभ्यं नित्यं नमो नमः।।

दक्षिण-दल में—**'ॐ चण्डोग्रे इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ॐ ह्रीं श्रीं चण्डोग्रायै नमः'** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ लक्ष्मीस्त्वं सर्व-भूतानां, सर्व-भूताभय-प्रदा।
देवि! त्वं सर्व-कार्येषु, वरदा भव शोभने।।

नैर्ऋत में— **'ॐ चण्ड-नायिके इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ॐ ह्रीं श्रीं चण्ड-नायिकायै नमः'** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ या सिद्धिरिति नाम्ना तु, देवेश-वर-दायिनी।
कलि-कल्मष-नाशाय, नमामि चण्ड-नायिकां।।

पश्चिम में—**'ॐ चण्डे इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ॐ ह्रीं श्रीं चण्डायै नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ देवि चण्डात्मिके चण्डि! चण्डारि-विजय-प्रदे!
धर्मार्थ - मोक्षदे दुर्गे! नित्यं मे वरदा भव॥

वायव्य दल में—'ॐ चण्डवति इहागच्छ' से आवाहन कर 'ॐ ह्रीं श्रीं चण्डवत्यै नमः' से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ या सृष्टि - स्थिति-संहार-गुण-त्रय-समन्विता।
या परा शक्तयस्तस्यै, चण्ड-वत्यै नमो नमः॥

उत्तर में—'ॐ चण्ड-रूपे इहागच्छ' से आवाहन कर 'ॐ ह्रीं श्रीं चण्ड-रूपायै नमः' से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ चण्ड-रूपात्मिका चण्डी, चण्ड-नायक-नायिका।
सर्व-सिद्धि-प्रदा देवी, तस्यै नित्यं नमो नमः॥

ईशान में—'ॐ अति-चण्डिके इहागच्छ' से आवाहन कर 'ॐ ह्रीं श्रीं अति-चण्डिकायै नमः' से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ बालार्करुण-नयना, सर्वदा भक्त-वत्सला।
चण्डासुरस्य मथनी, वरदास्त्वति-चण्डिका॥

तदनन्तर पद्म के मध्य में—'ॐ चतुःषष्टि-योगिन्यै इहागच्छत' से आवाहन कर 'ॐ ह्रीं श्रीं ब्रह्माण्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं रौद्र्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं गौर्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राण्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं कौमार्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं वैष्णव्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं दुर्गायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं नारसिंह्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं कालिकायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं चामुण्डायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं शिव-दूत्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं वाराह्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं कौशिक्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं माहेश्वर्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं शाङ्कर्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं जयन्त्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं सर्व-मङ्गलायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं काल्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं कपालिन्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं मेधायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं शिवायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं शाकम्भर्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं भीमायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं शान्तायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं भ्रामर्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं रुद्राण्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं अम्बिकायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं क्षमायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं धात्र्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं स्वाहायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं स्वधायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं अपर्णायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं महोदर्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं घोर-रूपायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं महा-काल्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं भद्र-काल्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं भयङ्कर्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं क्षेमङ्कर्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं उग्र-चण्डायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं प्रचण्डायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं चण्डोग्रायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं चण्ड-नायिकायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं चण्डायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं चण्ड-वत्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं चण्ड्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं महा-मोहायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं प्रियङ्कर्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं बल-विकरण्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं बल-प्रमथन्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं मनोन्मथन्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं सर्व-भूत-दमन्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं उमायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं तारायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं महा-निद्रायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं विजयायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं जयायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं शैल-पुत्र्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं चण्डिकायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं चण्द्र-घण्टायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं कूष्माण्डायै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं स्कन्द-मात्रे नमः, ॐ ह्रीं श्रीं कात्यायन्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं काल-रात्र्यै नमः, ॐ ह्रीं श्रीं महा-देव्यै नमः।

फिर पत्रों के अग्र भाग में— 'कोटि-योगिन्य इहागच्छत'

से आवाहन कर **'ॐ ह्रीं श्रीं कोटि-योगिनीभ्यो नमः'** से पूजन करे।

तब देवी के ईशान में—**'ॐ ब्रह्माणि इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ह्रीं श्रीं ॐ ब्रह्माण्यै नमः'** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ चतुर्मुखीं जगद्धात्रीं, हंसारूढां वर-प्रदाम्।
सृष्टि-रूपां महा-भागां, ब्रह्माणीं तां नमाम्यहं।।

वहीं पर **'ॐ माहेश्वरि! इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ह्रीं श्रीं ॐ माहेश्वर्यै नमः'** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ माहेश्वरीं शुभां शुभ्रां, त्रिनेत्रां वरदां शिवाम्।
माहेश्वरीं नमाम्यहं, सृष्टि - संहार-कारिणीम्।।

आग्नेय में—**'ॐ कौमारि! इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ह्रीं श्रीं ॐ कौमार्यै नमः** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ कौमारीं पीत - वसनां, मयूर-वर-वाहनाम्।
शक्ति-हस्तां सिताङ्गीं तां, नमामि वरदां सदा।।

वहीं पर—**'ॐ वैष्णवि! इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ह्रीं श्रीं ॐ वैष्णव्यै नमः'** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ शङ्ख - चक्र-गदा-पद्म-धारिणीं कृष्ण-रूपिणीम्।
स्थिति-रूपां खगेन्द्रस्थां, वैष्णवीं तां नमाम्यहं।।

नैर्ऋत्य दल में—**'ॐ वाराहि! इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ह्रीं श्रीं ॐ वाराह्यै नमः'** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ वाराह - रूपिणीं देवीं, दंष्ट्रोद्धृत-वसुन्धराम्।
शुभदां पीत-वसनां, वाराहीं तां नमाम्यहम्।।

वहीं पर **'ॐ नारसिंहि! इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ह्रीं श्रीं ॐ नारसिंह्यै नमः'** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ नृसिंह - रूपिणीं देवीं, दैत्य-दानव-दर्पहाम्।
शुभां शुभ-प्रदां शुभ्रां, नारसिंहीं नमाम्यहं।।

वायव्य दल में—**'ॐ इन्द्राणि! इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ह्रीं श्रीं ॐ इन्द्राण्यै नमः'** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ इन्द्राणीं गज-कुम्भस्थां, सहस्र-नयनोज्वलां।
नमामि वरदां देवीं, सर्व-देव-नमस्कृतां।।

वहीं पर **'ॐ चामुण्डे! इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डायै नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ चामुण्डां मुण्ड-मथनीं, मुण्ड-मालोप-शोभिताम्।
अट्टाट्ट-हास-मुदितां, नमाम्यात्म-विभूतये।।

पद्म के मध्य में—**'ॐ चण्डिके! इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ह्रीं श्रीं ॐ चण्डिकायै नमः'** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ कात्यायनीं दश-भुजां, महिषासुर-मर्दिनीं।
प्रसन्न-वदनां देवीं, वरदां तां नमाम्यहम्।।

वहीं पर **'ह्रीं श्रीं ॐ दुर्गायै नमः'** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ चण्डिके नव - दुर्गे! त्वं महादेव-मनोरमे!
पूजां समस्तां संगृह्य, रक्ष मां त्रिदशेश्वरि।।

अब निम्न मन्त्र से **भगवती दुर्गा** को **तीन पुष्पाञ्जलियाँ** दे—

एष पुष्पाञ्जलिः **ह्रीं श्रीं ॐ दुर्गायै नमः।**

इसके बाद **'ॐ जयन्त्याद्या! इहागच्छ'** से आवाहन कर **'ह्रीं श्रीं ॐ जयन्त्यै नमः'** एवं इसी प्रकार **ह्रीं श्रीं मङ्गलायै नमः, ह्रीं श्रीं कात्यै नमः, ह्रीं श्रीं भद्रकात्यै नमः, ह्रीं श्रीं कपालिन्यै नमः, ह्रीं श्रीं दुर्गायै नमः, ह्रीं श्रीं शिवायै नमः, ह्रीं श्रीं क्षमायै नमः, ह्रीं श्रीं धात्र्यै नमः, ह्रीं श्रीं स्वाहायै नमः, ह्रीं श्रीं स्वधायै नमः** से पूजा करे।

अस्त्र-पूजा—१ **'ॐ त्रिशूलाय नमः'** से पूजन कर प्रणाम करे—

ॐ **सर्वायुधानां प्रथमो, निर्मितस्त्वं पिनाकिना।**
शूलात् सारं समाकृष्य, कृत्वा मुष्टि-ग्रहं शुभं।।

२ **'ॐ खड्गाय नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **असिर्विशसनः खड्ग! तीक्ष्ण-धारो दुरासदः।**
श्रीगर्भो विजयश्चैव, धर्म-पाल! नमोऽस्तु ते।।

३ **'ॐ सुदर्शन-चक्राय नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **चक्र! त्वं विष्णु-रूपोऽसि, विष्णु-पाणौ सदा स्थितः।**
देवी - हस्त - स्थितो नित्यं, सुदर्शन! नमोऽस्तु ते।।

४ **'ॐ तीक्ष्ण-बाणाय नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **सर्वायुधानां श्रेष्ठोऽसि, दैत्य-सेना-निसूदनः।**
भयेभ्यः सर्वतो रक्ष, तीक्ष्ण-बाण! नमोऽस्तु ते।।

५ **'ॐ शक्तये नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **शक्तिरस्त्वं सर्व-देवानां, गुहस्य च विशेषतः।**
शक्ति-रूपेण सर्वत्र, रक्षां कुरु नमोऽस्तु ते।।

६ **'ॐ खेटकाय नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **यष्टि - रूपेण खेट! त्वमरि-संहार-कारकः।**
देवी-हस्त-स्थितो नित्यं, मम रक्षां कुरुष्व।।

७ **'ॐ पूर्ण-चापाय नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **सर्वायुध महामात्र, सर्व - देवारि - सूदन!**
चाप! मां सर्वतो रक्ष, साकं सायक-सत्तमैः।।

८ **'ॐ नाग-पाशाय नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **पाश! त्वं नाग-रूपोऽसि, विष-पूर्णो विषोदरः।**
शत्रूणां दुस्सहो नित्यं, नाग-पाश! नमोऽस्तु ते।।

९ **'ॐ अंकुशाय नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **अंकुशोऽसि नमस्तुभ्यं, गजानां नियमः सदा।**
लोकानां सर्व - रक्षार्थं, विधृतः पार्वती-करे।।

१० **'ॐ घण्टायै नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **हिनस्ति दैत्य - तेजांसि, स्वनेनापूर्य या जगत्।**
सा घण्टा पातु नो देवि! पापेभ्यो नः सुतानिव।।

११ **'ॐ परशवे नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **परशो! त्वं महा - तीक्ष्णः, सर्व-देवारि-सूदनः।**
देवी-हस्त-स्थितो नित्यं, शत्रून् क्षय नमोऽस्तु ते।।

१२ **'ॐ दुर्गायै सर्वायुध-धारिण्यै नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **सर्वायुधानां श्रेष्ठानि, यानि यानि त्रिपिष्टपे।**
तानि तानि दधत्यैः ते, चण्डिकायै नमो नमः।।

अब तीन पुष्पाञ्जलियाँ **'एष पुष्पाञ्जलिः ह्रीं श्रीं ॐ दुर्गायै नमः'** से प्रदान करे।

तदनन्तर **'ॐ किरीटादिभ्यो देव्यङ्ग-प्रत्यङ्ग-भूषणेभ्यो नमः'** से एकत्र ही सब आभूषणों में पूजा करे।

फिर **'ॐ वज्र-नख-दंष्ट्रायुधाय महा-सिंहाय हुं फट् नमः'** से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **आसनं चासि दुर्गाया, नानालङ्कार-भूषितं।**
मेरु-शृङ्ग-प्रतिकाश, सिंहासन! नमोऽस्तु ते॥

'ॐ महिषासुराय नमः' से पूजा कर प्रणाम करे—

ॐ **महिष! त्वं महावीर, सर्वाभीष्ट-प्रदायकः।**
विनाशय महा-शत्रून्, धर्मराज-पदालयं॥

इसके बाद **'ॐ बटुका इहागच्छत'** से आवाहन कर **'ह्रीं श्रीं'** बीजों से प्रत्येक का पञ्चोपचार से पूजन करे। यथा—**'ह्रीं श्रीं ॐ सिद्ध-पुत्र-बटुकाय नमः।' 'ह्रीं श्रीं ज्ञान-पुत्र-बटुकाय नमः।' 'ह्रीं श्रीं सहज-पुत्र-बटुकाय नमः।' 'ह्रीं श्रीं समय-पुत्र-बटुकाय नमः।'**

तदनन्तर **'ॐ क्षेत्रपाला इहागच्छत'** इत्यादि से आवाहन कर प्रत्येक का पञ्चोपचार-पूजन करे। यथा—

'ह्रीं श्रीं ॐ हेतुकाय क्षेत्रपालाय नमः। ह्रीं श्रीं ॐ त्रिपुरघ्नाय क्षेत्रपालाय नमः। ह्रीं श्रीं ॐ अग्नि-जिह्वाय क्षेत्रपालाय नमः। ह्रीं श्रीं ॐ अग्नि-वेतालाय क्षेत्र-पालाय नमः। ह्रीं श्रीं ॐ कालाय क्षेत्रपालाय नमः। ह्रीं श्रीं ॐ कराला‌य क्षेत्रपालाय नमः। ह्रीं श्रीं ॐ एक-पादाय क्षेत्रपालाय नमः। ह्रीं श्रीं ॐ भीषणाय क्षेत्रपालाय नमः।

तब **'ॐ भैरवा इहागच्छत'** इत्यादि से आवाहन कर प्रत्येक का पञ्चोपचार-पूजन करे। यथा— **'ॐ असिताङ्गाय भैरवाय नमः।'** इसी प्रकार— **'ॐ रुरवे भैरवाय नमः, ॐ चण्डाय भैरवाय नमः, ॐ क्रोधाय भैरवाय नमः, ॐ उन्मत्ताय भैरवाय नमः, ॐ कपालिने भैरवाय नमः, ॐ भीषणाय भैरवाय नमः, ॐ संहाराय भैरवाय नमः।'**

इसकी बाद **सप्तमी-विधान**-वत् **दिक्-पालों की पूजा** कर बलिदान कर, पुष्पाञ्जलि आदि दे।

सन्धि-पूजा (अष्टमी-नवमी-सन्धि)

अष्टमी-नवमी के सन्धि-काल में आचमन कर विष्णु-स्मरण-पूर्वक **सामान्यार्घ्य-स्थापन** से **भूत-शुद्धि** तक कर्म कर **'ह्रीं श्रीं'** इस मन्त्र से तीन प्राणायाम कर **'ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः'** इत्यादि से **कराङ्ग-षडङ्ग-न्यास** कर निम्न ध्यान करे—

ॐ **काली कराल-वदना, विनिष्क्रान्तासि-पाशिनी।**
विचित्र - खट्वाङ्ग - धरा, नर-माला-विभूषणा॥
द्वीपि - चर्म-परीधाना, शुष्क-मांसाति-भैरवा।
अति - विस्तार-वदना, जिह्वा ललन-भीषणा॥
निमग्ना रक्त-नयना, नादापूरित-दिङ्-मुखा॥

इस प्रकार ध्यान कर अपने शिर पर पुष्प देकर मानसोपचारों से पूजन कर **विशेषार्घ्य** स्थापित कर **गणेशादि पञ्च देवताओं, आदित्यादि नव-ग्रहों** और **इन्द्रादि दिक्-पालों का पञ्चोपचार-पूजन** करे।

फिर **'नव-पत्रिका-वासिन्यै दुर्गायै नमः ॐ सर्व-देवताभ्यो**

नमः' से पूजा कर देवी का ध्यान कर **'ॐ चामुण्डे! इहागच्छ'** इत्यादि से आवाहन कर **'ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डायै नमः'** से षोडशोपचार पूजन करे।

तब **'ॐ चतुःषष्टि-योगिनीभ्यो नमः, ॐ कोटि-योगिनीभ्यो नमः, ॐ अष्ट-नायिकाभ्यो नमः, ॐ अस्त्रेभ्यो नमः, ॐ भूषणेभ्यो नमः, ॐ प्रतिमास्थ-देवताभ्यो नमः, ॐ चित्रस्थ-देवताभ्यो नमः'** से पञ्चोपचार-पूजन कर नवमी दण्ड में बलिदान कर दीप-माला सजाकर **'एते गन्ध-पुष्पे एतस्यै दीप-मालाय नमः, एतदधिपतये ॐ अग्नये नमः, एतत् सम्प्रदानाय ॐ चामुण्डायै नमः, एषा दीप-माला ह्रीं श्रीं ॐ चामुण्डायै नमः'** से देकर तैजसाधार भोज्यासन शय्यादिक प्रदान करे।

अन्त में **पुष्पाञ्जलि** देकर **आरती** कर **'ॐ सर्व-मङ्गल०'** इत्यादि से प्रणाम करे।

* * *

नवमी का कर्म-विधान

अष्टमी-विधान में **आवाहन** छोड़कर सभी कर्म करे। दन्त-काष्ठ हेतु अपामार्ग दे। **आरती** के बाद **दीप-माला** का पूर्व-वत् पूजन कर **'एषा दीप-माला ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः'** से निवेदन कर स्व-शाखोक्त विधि से **वह्नि-संस्थापन** कर **'ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा'** से अष्टोत्तर-शत साज्य-तिल-बिल्व-पत्रों से **होम** करे। प्रत्यक्ष देवता-होम के स्थल में—**'ॐ नव-पत्रिका-वासिन्यै दुर्गायै स्वाहा। ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। ॐ कार्तिकेयाय स्वाहा। ॐ वज्र-नख-दंष्ट्रायुधाय महा-सिंहाय हुं फट् स्वाहा। ॐ महिषासुराय स्वाहा। ॐ नाग-पाशाय स्वाहा। ॐ मूषिकाय स्वाहा। ॐ मयूराय स्वाहा। ॐ शिवाय स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा'** से प्रत्येक को साज्य-तिलों की आहुति दे।

कुमारी-पूजा

होम के बाद **कुमारी** को लाकर **देवी-बुद्धि** से पूजा करे— **'विष्णुरोमद्य'** इत्यादि **वार्षिक-शरत्कालीन दुर्गा-महा-पूजादि-कर्मणः परिपूर्ण-फल-प्राप्ति-कामः कुमारी-पूजनमहं करिष्ये (परार्थे करिष्यामि)'**—इस प्रकार सङ्कल्प कर **'ऐं एतज्जलं ॐ अमुक-कुमार्यै नमः, ह्रीं एतत् पाद्यं ॐ अमुक-कुमार्यै नमः, श्रीं इदमर्घ्यं ॐ अमुक-कुमार्यै नमः, हुं एष गन्धः ॐ अमुक-कुमार्यै नमः, ऐं एतत् पुष्पं ॐ अमुक-कुमार्यै नमः, ह्सौः एष धूपः ॐ अमुक-कुमार्यै नमः, ह्सौः एष दीपः ॐ अमुक-कुमार्यै नमः'** इस प्रकार पूजन कर षडङ्ग-पूजन करे। यथा—

एते गन्ध-पुष्पे ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं ह्सौः कुल-कुमारिके हृदयाय नमः, ह्रैं वैं ह्रैं ऐं स्वाहा शिरसे स्वाहा नमः, ऐं ह्रीं शिखायै वषट् नमः, ऐं वागीश्वरि कवचाय हुम् नमः, ऐं कुलेश्वरि नेत्र-त्रयाय वौषट् नमः, ह्रीं अस्त्राय फट् नमः।

तदनन्तर **'ऐं सिद्ध-जयाय पूर्व-वक्त्राय नमः, ऐं जयाय**

उत्तर-वक्त्राय नमः, ऐं ह्रीं श्रीं कुब्जिके पश्चिम-वक्त्राय नमः, ऐं कालिके दक्ष-वक्त्राय नमः' से पूजन करे।

फिर **कुमारी** को वस्त्र पहना कर भोजन कराकर तीन बार उसकी प्रदक्षिणा कर उसे दक्षिणा प्रदान करे। यथा—**अद्येत्यादि वार्षिक शरत्कालीन-दुर्गा-पूजादि-परिपूर्ण-फल-प्राप्ति-कामनया कृतैतत्-कुमारी-पूजा-कर्मणः साङ्गतार्थं दक्षिणामिदं स्वर्ण मौक्तिकं वा श्रीविष्णु-दैवतं यथा-सम्भव-गोत्र-नाम्ने अमुक-कुमार्यै तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

तब मूल-दक्षिणा दे। यथा—**विष्णुरोमित्यादि श्रीदुर्गा-प्रीति-कामनया कृतैतत् वार्षिक-शरत्कालीन-दुर्गा-महापूजा-कर्मणा साङ्गतार्थं दक्षिणामिदं काञ्चन-मूल्यं श्रीविष्णु-दैवतं यथा-सम्भव-गोत्र-नाम्ने श्रीदुर्गा देव्यै तुभ्यमहं सम्प्रददे।**

इसके बाद हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र पढ़े—**ॐ कृतैतद्-वार्षिक-शरत्कालीन-दुर्गा-महापूजा-कर्माच्छिद्रमस्तु। ब्राह्मणः ॐ अस्तु।**

तब **'विष्णुरोमद्येत्यादि दुर्गा-महापूजा-कर्मणि यद्-वैगुण्यं जातं तद्-दोष-प्रशमनाय श्रीविष्णु-स्मरणमहं करिष्ये'** इस प्रकार सङ्कल्प कर **'ॐ विष्णुः'** मन्त्र का **दश बार जप** करे। अन्त में निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ अज्ञानाद् यदि वा मोहात्, प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः, सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।

ॐ यदसाङ्गं कृतं कर्म, जानता वाप्यजानता।
साङ्गं भवतु तत् सर्वं, हरेर्नामानुकीर्तनात्।।

जल-गण्डूष लेकर—

ॐ प्रीयतां पुण्डरीकाक्षः, सर्व-यज्ञेश्वरो हरिः।
तस्मिंस्तुष्टे जगत्तुष्टं, प्रीणिते प्रीणितं जगत्।।

ॐ एतत् कर्म श्रीकृष्णाय अर्पितमस्तु।

यह कहकर भूमि पर छोड़ दे।

* * *

दशमी का कर्म-विधान

आचमन कर सामान्यार्घ्य-स्थापनादि कर **गणेशादि देवताओं की पूजा, देवी का ध्यान, पञ्चोपचार-पूजन** कर निवेदन करे—

एतत् दधिकरम्बं ह्रीं दुर्गायै नमः।

तथा हाथ जोड़कर **प्रार्थना** करे—

ॐ विधि-हीनं क्रिया-हीनं, भक्ति-हीनं यदर्चितं।
पूर्णं भवतु तत्सर्वं, त्वत्प्रसादान्महेश्वरि।।

ॐ अर्घ्यं पुष्पं च नैवेद्यं, माल्यं मलय-वासिनि!
गृहाण वरदे देवि! कल्याणं कुरु मे सदा।।

ॐ ग्रहीतुं शारदीं पूजां, मर्त्त-मण्डल-संस्थिता।
चण्डिके! त्वां नमाम्यद्य, स्वयमर्घ्यादि गृह्यतां।।

ॐ राज्यं तस्य प्रतिष्ठा च, लक्ष्मीस्तस्य सदा स्थिरा।
प्रभुत्वं तस्य सामर्थ्यं, यस्य त्वं मस्तकोपरि।।

ॐ निर्वीर्यो निर्गुणो वापि, सत्याचार-विवर्जितः।
नरः पौरुषमाप्नोति, यस्य त्वं मस्तकोपरि।।

ॐ स श्लाघ्यः स गुणी धन्यः, स कुलीनः स बुद्धिमान्।
स शूरः स च विक्रान्तो, यस्त्वया देवि वीक्षितः।।

ॐ धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं, सफलं जीवितं मम।
आगताऽसि यतो दुर्गे, माहेश्वरि! मदाश्रमं।।

अब **नीराजन** कर **योनि-मुद्रा** दिखा कर **'ॐ दुर्गे देवि परिवार-गण-सहिते! क्षमस्व'** से **घट का सम्प्रोक्षण** कर उसे कुछ हिलाकर **'संहार'-मुद्रा** से एक पुष्प उठाकर सूंघे और मन्त्र पढ़े—

ॐ उत्तरे शिखरे देवि! भूम्यां पर्वत-वासिनि!
ब्रह्म-योनि-समुत्पन्ने, गच्छ देवि! ममान्तरं।।

-फिर सुषुम्ना से तत्-तेज को अपने हृदय में लाकर ईशान कोण में एक **अधो-मुख त्रिकोण-मण्डल** बना उस पर **'ॐ चण्डेश्वर्यै नमः'** से निर्माल्य छोड़े। हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ उत्तिष्ठ देवि चामुण्डे! शुभां पूजां प्रगृह्य च।
कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह।।

ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं, स्व-स्थानं परमेश्वरि!
यत्पूजितं मया देवि! परिपूर्णं तदस्तु मे।।

ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं, यत्र देवो महेश्वरः।
शत्रु - दर्प - विनाशाय, पुनरागमनाय च।।

ॐ गच्छ देवि! यथा-स्थानं, दत्वा मे विपुलां श्रियं।
आयुरारोग्य - सम्पत्तीः, सर्वदा वरदा भव।।

ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं, स्व-स्थानं परमेश्वरि!
सम्वत्सरे व्यतीते तु, पुनरागमनाय च।।

ॐ देवि! त्वं सर्व-भूतानां, भोगदा कामदा सदा।
दत्वा मे सर्व-सौख्यं च, गच्छ देवि! यथेच्छया।।

इसके बाद **'ॐ व्रज त्वं स्रोतसि जले तिष्ठ गेहे च भूतये'** इस मन्त्र से **देवी-प्रतिमा** और **नव-पत्रिका** को कुछ हिलाकर उसे दर्पण में प्रति-बिम्बित जल में स्थापित कर निम्न मन्त्र पढ़े —

ॐ निमज्याम्भसि देवि! त्वं पत्रिका-सहिताम्बिके!
पुत्रायुर्धन-वृद्ध्यर्थं, स्थापिताऽसि मया जले।।

ॐ क्षमस्व वरदे देवि! मङ्गल्ये परमेश्वरि!
सर्वगे शुभगे देवि! दृष्टादृष्ट-फल-प्रदे।।

ॐ कृता पूजा मया भक्त्या, नव-दुर्गे सुरार्चिते!
भुक्त्वा भोगान् वरं दत्वा, कुरु क्रीडां यथा-सुखं।।

ॐ जले तिष्ठ महामाये! नृणां सन्ताप-नाशिनि!
यत एवागता देवि! तत्रैव प्रति-गम्यताम्।।

तदन्तर **गणेश-घट, कल्पारम्भ-घट** और **बोधन-घट** को **'क्षमस्व'** से **विसर्जित** करे।

अपराह्न में **अपराजिता का पूजन** करे; यथा—

स्वस्तिवाचन कर **'विष्णुरोमद्येत्यादि क्षेम-कामः**

अपराजिता-पूजनमहं करिष्ये' इस प्रकार **सङ्कल्प** करे। फिर **'आं अंगुष्ठाभ्यां नमः'** इत्यादि से न्यासादिक कर **ऋष्यादि-न्यास** करे—

शिरसि ॐ वेदव्यासाय नमः। मुखे ॐ अनुष्टुभे छन्दसे नमः। हृदि ॐ अपराजितायै नमः। गुह्ये ऐं वीजाय नमः। पादयोः ॐ ह्रीं शक्तये नमः। सर्वाङ्गे ॐ ऐं कीलकाय नमः।

फिर **'घट'-स्थापन** कर **गणेशादि-पूजन** कर ध्यान करे। यथा—

ॐ **नीलोत्पल-दल-श्यामां, भुजगाभरणोज्वलां।**
बालेन्दु-मौलिनीं देवीं, नयन-त्रितयान्वितां।।
शङ्ख-चक्र-धरां देवीं, वरदां भय-नाशिनीं।
पीनोत्तुङ्ग-स्तनां श्यामां, वर-पद्म-सुमालिनीं।।

अब मानसोपचार-पूजन कर पुनः ध्यान-पूर्वक **'ॐ अपराजिते! इहागच्छ'** से आवाहन कर षोडशोपचार-पूजन करे। फिर **'ॐ सर्व-मङ्गल०'** इत्यादि से प्रणाम कर दक्षिणा प्रदान करे।

राजा हेतु **सङ्कल्प-प्रार्थना** निम्न प्रकार से करे—

ॐ **हारेण तु विचित्रेण, भास्वत्कनक-मेखला।**
अपराजिता भद्र-रता, करोतु विजयं मम।।

पुष्पाञ्जलि-मन्त्र

ॐ **आयुर्देहि यशो देहि, भाग्यं भगवति! देहि मे।**
पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामांश्च देहि मे।।
एष पुष्पाञ्जलिः ॐ दुर्गायै नमः।

ॐ **हर पापं हर क्लेशं, हर शोकं हरासुखम्।**
हर रोगं हर क्षोभं, हर मारीं हर-प्रियै।।

ॐ **कायेन मनसा वाचा, कर्मणा यत् कृतं मया।**
ज्ञानाज्ञान - कृतं पापं, दुर्गे! त्वं हर दुर्गतिम्।

श्रीदुर्गा-स्तुति

ॐ **दुर्गां शिवां शान्ति-करीं, ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियां।**
सर्व - लोक-प्रणेत्रीं च, प्रणमामि सदा शिवाम्।।
मङ्गलां शोभनां शुद्धां, निष्कलां परमां कलां।
विश्वेश्वरीं विश्व-मातां, चण्डिकां प्रणमाम्यहम्।।
सर्व - देव - मयीं देवीं, सर्व - रोग-भयापहां।
ब्रह्मेश - विष्णु-नमितां, प्रणमामि सदा उमां।।
विन्ध्यस्थां विन्ध्य-निलयां, दिव्य-स्थान-निवासिनीं।
योगिनीं योग-मातां च, चण्डिकां प्रणमाम्यहम्।।
ईशान - मातरं देवीमीश्वरीमीश्वर - प्रियां।
प्रणतोऽस्मि सदा दुर्गां, संसारार्णव - तारिणीं।।
य इदं पठति स्तोत्रं, शृणुयाद् वापि यो नरः।
स मुक्तः सर्व - पापस्तु, मोदते दुर्गया सह।।

* * *

गताङ्क से आगे :

'सौन्दर्य-लहरी' (सम-श्लोकी अनुवाद)

❖ पण्डित दामोदरदत्त मिश्र 'प्रसून', 'ललिता-निकेतन', ग्रा०-पो० कोरान-सराय, बक्सर (बिहार)

☐ पुत्र-स्वरूप देवताओं द्वारा माँ के मुख-स्थित ताम्बूल को प्राप्त करने की होड़—

हराया दैत्यों को मुकुट-कवचादिक हर लिया,
फिरे तो चण्डांश-त्रिपुर-हर-जूठन नहिं लिया।
बुभुक्षा थी, कार्तिक, सुर-पति, हरी भी तब लगे—
उड़ाने माँ, तेरे मुख-बिच रखी पान-सिलियाँ॥६५॥

☐ सम्भाषण की मधुरता का वर्णन—

स्व-वीणा पै गाई विविध गुण-गाथा जु शिव की—
उसे ही जो तूने सिरफ कहके वर्णन किया।
हिला उनका सर औ विरस वह वीणा पड़ गई—
जिसे वाग्-देवी ने तुरतहिं छिपाया स्व-पट में॥६६

☐ चिबुक (ठुड्डी) का वर्णन—

कराग्रों से छुआ तुहिन - गिरि ने वत्सल-तया—
उठाया भोले ने जब अधर-पानाकुल हुए।
त्रिशूली के 'हैण्डी' मुख-मुकुर के 'स्टैण्ड'-सम जो—
बताऊँ कैसे उस अतुलित तुम्हारे चिबुक को॥६७॥

☐ भगवती की ग्रीवा और उसमें पड़े हार का वर्णन—

मुरारी की बाँहों बिच पड़, बनी कण्टक-वती,
तुम्हारी गर्दन में मुख-कमल की नाल-सुषमा।
स्वयं श्वेता काला अगर जु लगा, तेन मलिना—
कमल की डण्टी-सी छवि धर रही हार-लतिका॥६८

☐ गले की तीन रेखाओं का वर्णन—

गले के रेखा-त्रय, गति-गमक-गीतैक-निपुणे,
निशानी है शादी-समय पर बाँधे कङ्कण की।
मधुर-तम रागों के जनक उन ग्राम-त्रयन के—
ठहरने के वास्ते नियम-गण-सीमा-सरिस हैं॥६९॥

☐ बाहु-वर्णन—

भुजाएँ पद्मों-सी तव जननि! जो चार विलसैं,
उन्हीं की शोभा की स्तुति विधि करैं चार मुख से।
डरे जो हैं अन्धक रिपु-मदन रिपु के नखन से,
अतः चारों अपने मुखन हित चाहें अभय वे॥७०॥

☐ हस्त-नख-कान्ति-वर्णन—

हँसे जो कञ्जों पै अइस नख की जोति-युत, उन—
करों की शोभा का कथय किमि मैं वर्णन करूँ?
तुले जो थोड़ा-सा कमल यदि, तो सम्भव तभी—
जभी लक्ष्मी जी के चरण-गत-आलक्त-युत हो॥७१॥

☐ पयोधर-वर्णन—

गणेश औ कार्तिक ने मिलकर पिए जो स्तन दुनों,
सदा चूते जिनके मुख वह हमारे दुख हरें।
जिन्हें लख के शङ्काकुलित मन से हस्ति-मुख ने—
स्व-कुम्भों को छुआ, जिस पर शिवे! तू हँस पड़ी॥७२॥
सुधा धारे तेरे स्तन - युगल माणिक्य - घट हैं,
न शङ्का इसमें है नग-पति-पताके! तनिक भी।
जिन्हे पीके अद्यावधि प्रियतमा स्वाद तजि के—
रहे क्वाँरे प्यारे गज - वदन औ षड्-वदन जी॥७३॥
गजासुर के मस्तक-जनित मुकुता से रचित जो—
सुघड़ मोती - माला, प्रतिफलित - विम्बाधर जहाँ।
उसी माला से युत, कुच - युगल मध्यान्तर उमे!
प्रताप - व्यामिश्रित पुर-मथन की कीर्ति-सम है॥७४॥

☐ स्तन्य (दुग्ध)-वर्णन—

दुगध तेरा मानूँ धरणि - धर कन्ये! हृदय से—
चला सागर पय का गुण सुमति का है, जँह भरा।
दयार्द्रा तुम से ले, अथ च जिसको पीकर बना—
द्रविड़ का बच्चा भी मधुर कविता का कवयिता॥७५॥

गताङ्क से आगे :

नव-ग्रह 'वार'-व्रत-विधि

(४) 'बुध'-ग्रह हेतु बुध-वार का व्रत

जब **'जन्म'-कुण्डली** या **'गोचर'** के अनुसार **'बुध'**-ग्रह अनुकूल न हों, तब **'बुध-वार का व्रत'** करना चाहिए। **'बुध-वार का व्रत'** वैसे भी **व्यापार में सफलता-प्रदायक** होता है।

'बुध-वार के व्रत' को किसी भी मास में **शुक्ल-पक्ष के प्रथम 'बुध-वार'** से प्रारम्भ करना चाहिए। फिर लगातार **३० बुध-वार** तक **'व्रत'** करना चाहिए।

'बुध-वार के व्रत' के भोजन में मूँग की दाल, घी के बने हुए पदार्थ का भोजन सूर्यास्त के आधे घण्टे बाद करना चाहिए।

'व्रत-काल' में स्नान **विधारा** या **वृद्ध-मूल की जड़** को गर्म जल में उबालकर, स्नान करनेवाले जल में डालकर करना चाहिए। स्नान के बाद अधिक-से-अधिक हरे रङ्ग के वस्त्र धारण करना चाहिए। **'स्नान'** के बाद नित्य-पूजन में **भगवान् बुध** के निम्न-लिखित किसी एक मन्त्र का ३, ५, ७ या ११ बार **'जप'** करना चाहिए। यथा—

मन्त्र— (१) **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ॐ।** (११ अक्षर)

(२) **ॐ हां क्रीं टं ग्रह-नाथाय बुधाय स्वाहा।** (१४ अक्षर)

'३० बुध-वार व्रत' करने के बाद सम्भव हो, तो **'हवन'** करे। **'हवन'** में **'अपा-मार्ग'** की लकड़ी का प्रयोग करे। ११ या २१ **आहुतियाँ** उक्त मन्त्र में से किसी एक मन्त्र को पढ़कर दे। **'पूर्णाहुति'** में **अक्षत, फल, गोरोचन, मधु, मोती** और **हरे वस्त्र** आदि **भगवान् बुध** को चढ़ाए। 'हवन' के बाद **भगवान् बुध** को **'अर्घ्य'** देवे, फिर **'आरती'** करे।

* * *

(५) 'गुरु'-ग्रह हेतु गुरु-वार का व्रत

जब **'जन्म'-कुण्डली** या **'गोचर'** के अनुसार **'गुरु'**-ग्रह अनुकूल न हो, तो **'गुरु-वार का व्रत'** करना चाहिए। **'गुरु-वार का व्रत'** वैसे भी **वैवाहिक सुख-सौभाग्य का प्रदायक** होता है।

'गुरु-वार के व्रत' को किसी भी मास में **शुक्ल-पथ के प्रथम गुरु-वार** से प्रारम्भ करना चाहिए। फिर लगातार **३६ गुरु-वार तक 'व्रत'** करना चाहिए।

'गुरु-वार' के व्रत के भोजन में चने की दाल, गुड़ और घी के बने पदार्थों का प्रयोग करना चाहिए। सूर्यास्त के एक घण्टे बाद भोजन करना चाहिए।

'व्रत-काल' में स्नान **भारङ्गी** या **बमनेठी की जड़** को गर्म जल में उबाल कर, स्नान

करनेवाले जल में डालकर करना चाहिए। स्नान के बाद **पील रङ्ग के वस्त्र** धारण करना चाहिए। **'स्नान'** के बाद नित्य-पूजन में **भगवान् बृहस्पति** के निम्न-लिखित किसी एक मन्त्र का ३, ५, ७ या ११ बार **'जप'** करना चाहिए। यथा—

(१) **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः ॐ।** (११)

(२) **ॐ ह्रीं श्रीं खीं ऐं ग्लौं ग्रहाधिपतये बृहस्पतये ब्रीं ठः ऐं ठः श्रीं ठः स्वाहा।** (२५)

'३६ गुरु-वार व्रत' करने बाद सम्भव हो, तो **'हवन'** करे। **'हवन'** में **'अश्वत्थ'** की लकड़ी का प्रयोग करे। ११ **आहुतियाँ** उक्त मन्त्र में से किसी एक मन्त्र को पढ़कर दे। **'पूर्णाहुति'** में **पीली सरसों, मालती का फूल, मुलेठी, मधु** और **बेसन का लड्डू गुरु-देव बृहस्पति** को अर्पित करे। 'हवन' के बाद **भगवान् बृहस्पति का ध्यान** करे और उनके **स्तोत्र** आदि का पाठ करे।

* * *

(६) 'शुक्र'-ग्रह हेतु 'शुक्र-वार का व्रत'

जब **'जन्म'-कुण्डली** या **'गोचर'** के अनुसार **'शुक्र'**-ग्रह अनुकूल न हों, तब **'शुक्र-वार का व्रत'** करना चाहिए। वैसे भी **'शुक्र-वार का व्रत'— यात्रा** और **वाद-प्रतिवाद में विजयी होने के लिए** बहुत लाभ-दायक होता है।

'शुक्र-वार के व्रत' को किसी भी मास में **शुक्ल-पक्ष के प्रथम 'शुक्र-वार'** से प्रारम्भ करना चाहिए। फिर लगातार **३० शुक्र-वार तक 'व्रत'** करना चाहिए।

'शुक्र-वार के व्रत' के भोजन में चावल, चीनी और दूध से बने पदार्थों का प्रयोग करे। सूर्यास्त के डेढ़ घण्टे बाद भोजन **भगवान्-स्वरूप शुक्रदेव** को अर्पित कर करना चाहिए।

'व्रत-काल' में स्नान **मंजीठ की जड़** को गर्म जल में उबालकर स्नान करनेवाले जल में डालकर करना चाहिए। स्नान के बाद अधिकतर **श्वेत-वस्त्र** धारण करना चाहिए। **'स्नान'** के बाद नित्य-पूजन में **भगवान् शुक्र देव** के निम्न-लिखित किसी एक मन्त्र का ३, ५, ७ या ११ बार **'जप'** करना चाहिए। यथा—

मन्त्र— (१) **ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।** (१० अक्षर)

(२) **ॐ ऐं जं गं ग्रहेश्वराय शुक्राय नमः।** (१४ अक्षर)

'३० शुक्र-वार व्रत' करने के बाद सम्भव हो, तो **'हवन'** करे। **'हवन'** में **'औडम्बर'** की लकड़ी का प्रयोग करे। ११ या २१ **आहुतियाँ** उक्त मन्त्र में से किसी एक मन्त्र को (अक्षर) दे। **'पूर्णाहुति'** में **इलायची, मनशिला, केशर** और **दूध भगवान् शुक्र** को अर्पित करे। **'हवन'** के बाद **'आरती'** करे तथा **गायन-वादन** करे। हो सके तो **'रात्रि-जागरण'** करे।

* * *

श्रद्धाञ्जलि :

ब्रह्म-लीन पण्डित सूर्यदेव शर्मा जी

❖ **'प्रयाग-गौरव : कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल, श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज (उ०प्र०) २११००६**

'चण्डी' के पाठकों को यह जाकर दुःख होगा कि **श्रीपीताम्बरा-पीठ, दतिया (म०प्र०)** के सचिव **पण्डित सूर्यदेव शर्मा जी** अब हमारे बीच स-शरीर नहीं हैं। आपका **'मणिपुर'-वास** हो गया है। भाद्रपद शुक्ला नवमी, 'जय'-सं० २०५८ वि०—सोमवार, २७ अगस्त, २००१ को **'ज्येष्ठा-देवी (माँ धूमावती) पूजा-तिथि'** के दिन आपने ८७ वर्ष की अवस्था में महा-प्रयाण किया। 'महा-प्रयाण' के दो मिनट पूर्व आपके शब्द थे—**'माँ बुलाने आई हैं।'**

लगभग ५३ वर्षों से **'दतिया'** को अपनी **'कर्म-भूमि'** बनानेवाले **पण्डित सूर्यदेव शर्मा** जी परम **'देश-भक्त'** थे। आप महान् क्रान्तिकारी दामोदर विनायक सावरकर के विश्वसनीय सहयोगी थे। आपका जन्म 'गङ्गा'-तट पर ग्राम कठउत, जिला गाजीपुर (उ०प्र०) में १६ जून, १९१५ को हुआ था। अपनी ओजस्वी वाणी से आप युवावस्था में ही 'हिन्दू महा-सभा' के शीर्षस्थ नेता बन गए थे। कहते हैं कि वीर सावरकर जी ने आपसे कहा था कि—'सूर्यदेव, अभी हिन्दू अपनी आवाज नहीं सुनेगा, पचास वर्ष बाद सुनेगा। अभी परिवार का पालन करो।' सावरकर जी के परामर्श पर आपने 'बिड़ला उद्योग' में नौकरी कर ली थी।

श्रीपीताम्बरा-पीठ, दतिया के संस्थापक पीठाधीश्वर पूज्य-पाद **श्रीस्वामी जी महाराज** ने आपको अपनी गुरु-दृष्टि से पहचान कर न केवल दतिया की ओर आकृष्ट किया, अपितु २३ वर्षों से ग्वालियर में 'बिड़ला-समूह' की नौकरी में अच्छे वेतन पर सेवा-रत **श्रीशर्मा जी** को **'श्रीपीताम्बरा-पीठ'** की व्यवस्था सँभालने हेतु बुला लिया। 'गुरु'-निर्देश मिलते ही, आपने 'बिड़ला-समूह' के महा-प्रबन्धक बाबू दुर्गाप्रसाद मण्डेलिया को अपना 'त्याग'-पत्र भेज दिया। कहते हैं कि **श्रीस्वामी जी महाराज** यदा-कदा अपने निकट निरन्तर रहनेवाले सेवकों को पारिश्रमिक बाँटते थे। तब **स्वामी जी** ने **श्रीशर्मा जी** को ३ लाख रु० अतिरिक्त दिलाए। **श्रीशर्मा जी** ने इस अतिरिक्त धन-राशि को 'गुरु'-प्रसाद माना और जो भी धन उन्हें मिला, उसी से उन्होंने अपने शेष जीवन के निजी व्ययों का वहन किया।

श्रीसूर्यदेव शर्मा जी को **श्रीपीताम्बरा-पीठ, दतिया (म०प्र०)** में लोग आदर-पूर्वक **पण्डित जी, चाचा जी** या **बाबू जी** कहकर सम्बोधित करते थे। 'श्रीपीताम्बरा-पीठ', दतिया (म०प्र०) का आज जो वृहद् विकसित, सु-व्यवस्थित स्वरूप है, उसके पीछे **पण्डित सूर्यदेव शर्मा जी** का योग-दान विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

पण्डित जी के परिवार में उनकी धर्म-पत्नी **यशोदा देवी,** दो विवाहित पुत्रियाँ—**डा० दुर्गा प्रधान** व **प्रो० डा० कमला राय** एवं अन्य परिवार-गण हैं। आपके प्रशंसक देश में दूर-दूर तक हैं। **'अध्यात्म'** के साथ-साथ, आदर्श-निष्ठा-परिश्रम एवं असहायों की सहायता करनेवाला आपका स्नेह-मय व्यक्तित्व—हम सबके लिए सदैव-सदैव अनुकरणीय रहेगा।

'चण्डी'-पत्रिका एवं **'चण्डी-परिवार'** के प्रति आप विशेष कृपा करते थे। **'चण्डी-परिवार'** आपके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है।

* * *

रजि० सं० ए० डी० ६१ सितम्बर-अक्टूबर, २००१ रजि० सं० ३२६८१/५७

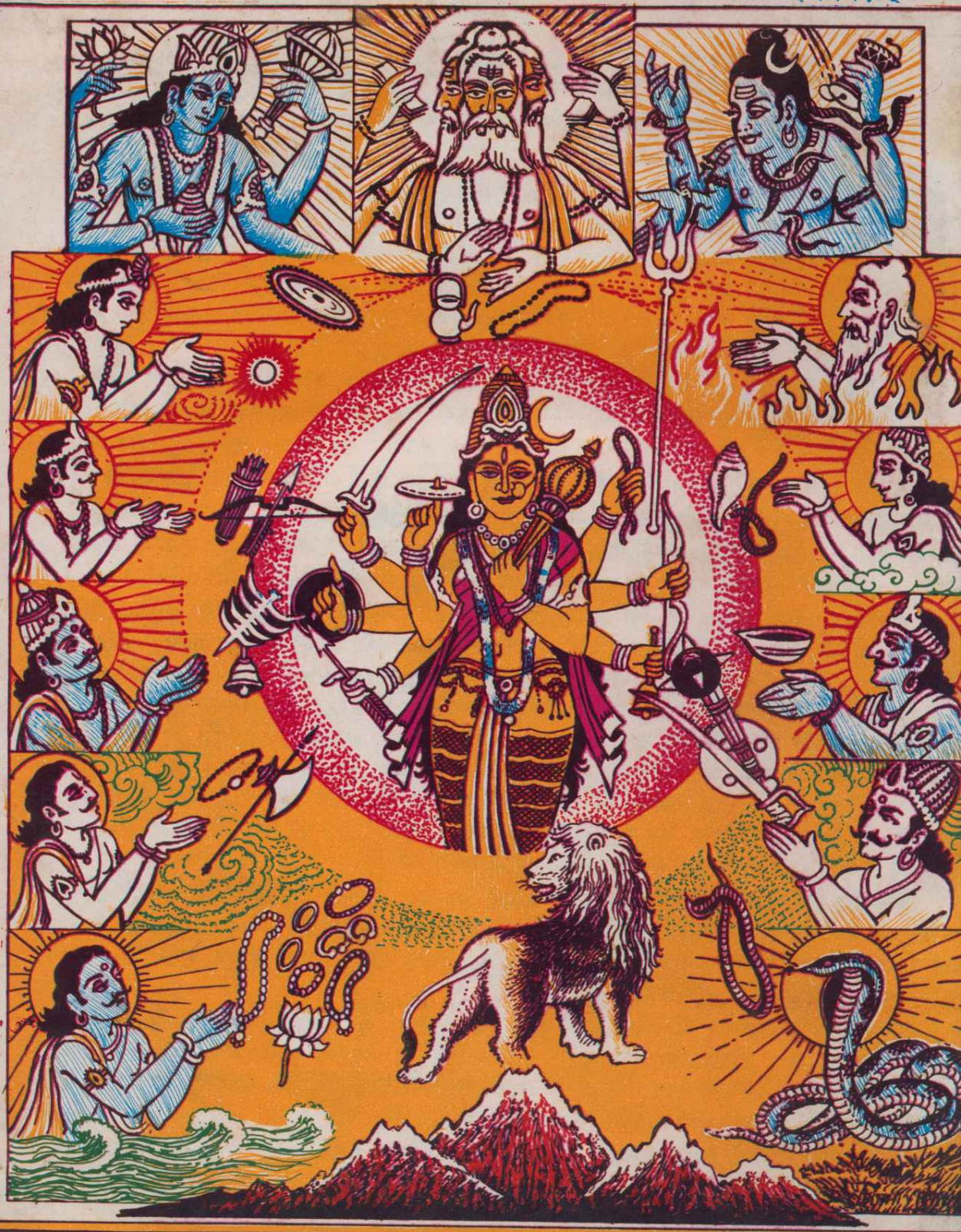

सम्पादक/प्रकाशक/मुद्रक : श्रीऋतशील शर्मा, चण्डी-धाम, प्रयाग-६ ☎ ५०२७८३